कलानिधि

कलानिधि

कालीकान्त झा 'बूच'



श्रुति प्रकाशन
दिल्ली

ISBN : 978-93-80538-31-0

मूल्य: भा. रु.100/-

पहिल संस्करण : 2010

श्रुति प्रकाशन

रजिस्टर्ड ऑफिस: ८/२१, भूतल, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली-११०००८.

दूरभाष-(०११) २५८८९६५६-५८ फैक्स- (०११)२५८८९६५७

Website:http://www.shruti-publication.com

e-mail: shruti.publication@shruti-publication.com

Printed at: Ajay Arts, Delhi-110002

टाइप सेट- आशीष चौधरी

Distributor : *Pallavi Distributors*, Ward no- 6, Nirmali (Supaul), मो.- 9572450405, 9931654742

Kalanidhi: Anthology of Maithili Poems by Late Kalikant Jha 'Buch'

समर्पण

ब्रह्मलीन श्री श्री १०८ श्री अनिरुद्ध ठाकुर, शिवस्वरूप गुरुदेवक संस्मरण
सुर-सरिता श्रद्धा सलिलोर्मिपर सकरुण
समर्पित

शिवरात्रि ११ फरबरी १९८३:   पदरजानुरागी बूच

(कविक अन्तिम इच्छाक अनुसार)

आमुख

१

एक टा अभिशप्त कवि : बूच बाबू

ऐ आलेखक आरंभ सर्वप्रथम गाम करियनमे कविक छविसँ करैत छी। गाममे ई कविजीक रूपमे ख्यात रहलाह मुदा हिनकर उपेक्षाक कथा सेहो गामेसँ प्रारम्भ होइत अछि। प्रख्यात दार्शनिक उदयनाचार्यक भूमिमे जनमल ई कवि ने गाममे न्याय पओलक ने बाहर। गंभीर लेखनकेँ मान्यता नै भेटैत देखि कवि गामक व्याहमे अभिनंदन पत्र लेखनमे सेहो रूचि लिअ लागलाह। एहि काजसँ ने हुनका गाममे केओ रोकलक ने बाहर केओ ।सौभाग्य ई जे एहि हीन साहित्यिक वृत्तिमे रमलाक बादो कवि मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ स्वागतगान लिखलन्हि। प्रत्यक्षदर्शी कहैत छथि जे गाम वैद्यनाथपुरमे ऐ गानक समए कतेको मंचस्थ माननीय तिलमिला उठलाह। ई गान मिथिला सहित मैथिलीक दुर्दशाक व्यथागीत बनि गेल-

उल्लासक गीत कतऽ सगरो करूणा क्रन्दन
उपटि रहल विपटि रहल मैथिलीक नन्दन वन
भ्रमरझुण्ड प्यासल छथि, वृहगवृन्द बड़ भूखल
मुरूझल छथि आम-मऽहू, रऽसक सरिता सूखल
बबुरे वन कवि कोकिल, लाजे मरै छी
आउ आउ आउ सब के स्वागत करै छी

कवि दोसर अनुच्छेदमे मैथिली मानुसक उत्सवप्रियतापर व्यंग्य करै छथि। हम सभ विद्यापति समारोह, हिन्दी दिवस, स्वतंत्रता दिवस, गांधी जयन्तीकेँ सत्यनारायण भगवानक कथाबला रीतिनिष्ठासँ मना लैत छिऐ आ समारोहक उच्च उद्देश्य ओहिना उपेक्षित रहि जाइत अछि ।

मात्र ई समारोही गोष्ठीसँ की हेतै?
स्थिति जहिना तहिना, संवत एतै जेतै
मुरदा जगाउ लाउ पैर पकड़ै अछि
आउ आउ सब के स्वागत करै छी

ई गान साहित्यक उद्देश्यपर सेहो विचार करैत अछि। कोनो खंडन मंडनक गुंजाइश नै छोड़ैत, ई स्पष्ट कहैत अछि-

काव्यपाठ करू मुदा कान्ह पर लिअ लाठी
एक हाथ रसक श्रोत, दोसरमे खोरनाठी
पुरना किछु त्यागि त्यागि, पकड़ू किछु नऽव ढ़ंग
मोंछो पिजाउ बाउ श्रृंगारक संग संग
अहाँ गीत गाउ मुदा हम हहरै छी

रसश्रोतक संगे खोरनाठी लऽ कऽ चलएबला ई कविता साधारण नै अछि। पाश्चात्य काव्यशास्त्र ई मानैत अछि जे महान साहित्य कोनो एक भाव लऽ कऽ नै चलैत अछि। ई साहित्यमे विविध आ कखनो कखनो परस्पर विरोधी भावक संश्लेष करैत अछि। बूच बाबूक कवितामे विरूद्धक ई सामंजस्य हमरा चकित करैत अछि।

हिंदी आलोचक राम चन्द्र शुक्ल विरूद्धक सामंजस्यकेँ एकटा बड़का काव्योपकरण मानैत छथिन्ह। बूच बाबूक एकटा आर कवितामे एकर दर्शन होइत अछि।

'सोनदाय' कविताकेँ ध्यानसँ पढ़ू।सर्वप्रथम एकरामे श्रृंगारिक लक्षण बुझाइत अछि।

रहतौ ने हास बहि जेतौ विलास गय
दुइ दिवसक जिनगीसँ हेवे निराश गय
भरमक तरंग बीच मृगतृष्णा जागल छौ
मोहक उमंग बीच प्राण किएक पागल छौ
चलि जेतौ सुनें कंठ लागल पियास गय
दुइ........

कवितामे दू टा भाव स्पष्ट अछि। प्रथम प्रेम निवेदन आ दोसर विरागक स्वीकृति। आ दूनू मिलि कऽ विषादक विराट रूपकेँ जन्म दैत छैक। जे ऐ कवितामे कोनो एकटा भाव रहितै, तखन ई कोनो विलक्षण कविता नै बनि सकैत छल।

एहि वैशिष्ट्यकेँ बूच बाबू कवितामे कोना आनैत छथि, ई बात बेस रूचिगर अछि। कवितामे विद्वान लक्षणा आ व्यंजनाकेँ पैघ बूझैत छथिन्ह मुदा कवि बूच अभिधापर निर्भर छथि। हुनकर कवितामे अलंकारक सेहो कतहु विशेष उपयोग नै अछि। तखन ऐ वैशिष्ट्यक श्रोत की अछि? एकर श्रोत अछि हुनकर विराट जीवनानुभव। अपन समृद्ध अनुभवक आधारपर ओ शब्दक नव जाल बूनैत छथि आ अपन रचनात्मक शक्तिकेँ यादि करैत ओकरा दृढ़ आ सुरेबगर बनबैत छथि।

एकटा अध्यापकक घरमे जन्म लेनिहार ई कवि सौन्दर्यक विविध रूपक साक्षात्कार कएलक। कखनहु जेठक उद्धत नदी करेह एकर मोनकेँ मोहैत अछि-

ई इन्होर पानि चमकै छौ
मोर मोरपर भौरी दै छौ
काटि काटि डीहक करेजकें
तऽरे तऽरे समाइ छौ

इएह कवि नागार्जुनक कविता 'एक फांक आंख' जकाँ नायिकाक ठोरक रस्तासँ अभिनव सौंदर्य देखैत अछि-

कि जहिना कुरकुर पानक ठोर
कि तहिना सुन्नरि तोहर ठोर
लगौलह बातक पाथर चून
सजौलह कऽथ कपोलक खून
कि रहलह एक्के बातक चूक
कतऽ छह प्रेमक पुंगी हूक?

ई कवि भारतक ग्राम्य सुषमाक अनन्य प्रेमी अछि। महानगरीय कृत्रिमताक स्थानपर ई सहज सौंदर्यकेँ वरेण्य मानैत अछि-

ईडेन गार्डेन सँ सुन्नर अछि
कोशी कातक बोन गय

इएह प्रेम एकटा प्रेमिकाक ह्रदयसँ निकलैत अछि-

प्रियतम चलि आबू पटनासँ गाम

ऐ प्रेमक ठोस आधार अछि। कवि नगरीय जीवन, शहरीकरण आ प्रशासनिक भ्रष्टाचारकेँ निशाना बनबैत अछि-

घूसखोर मच्छर उड़ीस जकाँ जीवै छै
शोनित तँ ओ अवशिष्ट पीवै छै
हड्डी सुखायल अछि तैयो ओ अधिकारी
खगले केर तीरै छै चाम

कुत्ता जहिना हड्डी सँ मांस,खून आ रस खींचैत अछि, तहिना सरकारी अधिकारी वर्ग सेहो आम जनताक संग करैत अछि। कवि स्वयं बिहार सरकारक राज्य कर्मचारी छलाह, ताइ दुआरे ऐ अनुभवसँ ओ नित्य प्रति गुजरैत हेताह।

मैथिली कवितामे हिंदी कविताक तुलनामे बेटीक ब्याह, दहेज आदिक बेशी चिंता रहलैक अछि। यद्यपि ई चिंता सीता, पार्वतीक ब्याहक रूपमे धार्मिक

आयाम लैत अछि, तथापि एकर मूलाधार सामाजिक अछि। अन्य मैथिल कविक संगे हुनको गौरी आ सीताकेँ कुमारी रहबाक दर्द छन्हि-

चामक सेज, कुगामक वासी
खन कैलाश, खनेखन काशी
लागथि बुत्त भुताह हे, गौरी रहथु कुमारी !

ई मिथिला अंचल मे व्याप्त दहेज आ समएसँ बेटीक व्याह नै हेबाक चिंता अछि। कवि सेहो ऐ चिंतासँ जूझैत अछि आ बेटीक लेल एकटा अद्भुत रूपक खोजैत अछि।'फूलडाली' क रूपमे बेटीक कल्पना करैत कवि बेटीमे तमाम पवित्रता आ दैवत्वकेँ रूपांतरित करैत अछि-

फूलडाली सन बेटी बनलै
माथे परक पहाड़

एक कवितामे कवि कोनो बेटाक बापकेँ चारिटा बेटी होएबाक व्यंग्यात्मक कल्पना करैत अछि-

तोरो कुमारि चारि दाय हो
मोन पड़ि जयतह नानी

एक अन्य कवितामे वरक खानदानकेँ व्यापारी देखाओल गेल अछि-

बबा दलाल बाप बड़दक व्यापारी,
बेटा बछौड़ बीकि गेलै हजारी

कविक ख्याति हास्य आ भक्ति कविक रूपमे रहल मुदा कविक फूलडालीमे सभ तरहक फूल छलए। फूल नाममात्रक नै काव्य उपवनक सभसँ मधुर, सुगंधित आ पवित्र फूल। कवि अपन दैन्य आ निराशाकेँ भक्ति गीतमे व्यक्त कएलक, ई गीत बहुत बेसी मात्रामे अछि मुदा मात्र एक गीतक चर्चा हम करैत छी, लागैत अछि जेना विद्यापति पदावलीक कोनो पद होअए-

जननि हय, जीवन हमर कठोर
अध्यावधि सुख-शांति न भेटल
पयलहूँ विपति अघोर
जननि हय जीवन हमर कठोर

बूच बाबू अपन जिनगी आ कवितामे काव्यशास्त्रीय रूढ़िक पालन नै केलाह ने ओ कोनो काव्यात्मक आंदोलनसँ जुड़ि कुकुरमुतिया काव्यक रचना केलाह। ओ ह्रदएसँ कविता करैत छलाह, ताइ दुआरे हुनकर आलोचना सेहो ह्रदएसँ हेबाक चाही। बिझिआइल हाँसूसँ भरिगर गाछ नै कटत। बूच बाबूक काव्यक आलोचना सोचि समझि कऽ होएबाक चाही। यद्यपि ओ कोनो तत्कालीन

आंदोलनमे रूचि नै लेलाह, परन्तु हुनकर कविता भाव आ शिल्प दुनू दृष्टिसँ रचनात्मक अछि। रचनात्मकता आ मौलिकताक औजारसँ हुनका परखल जाए तँ ओ मैथिली कविताक इतिहासमे किछु शीर्ष कविमे गणनीय छथि। मुदा हुनकर कविताक विषयमे बहुत भ्रांति अछि। कखनहु छपलाक दृष्टिसँ तँ कखनहु पुरस्कारक दृष्टिसँ हुनकर अवहेलना होइत चलि जाइत अछि। केओ आलोचक कविताक संख्याक दृष्टिसँ सेहो आपत्ति कऽ सकैत छथि! किएक तँ ई अभिनवगुप्त आ मम्मटक देश नै अछि। ई शतक आ सहस्त्रकम लिखएबलाक देश अछि! विडम्बना ई अछि जे कविक सुपुत्र श्री शिव कुमार झा सेहो मैथिली आलोचनासँ जुड़ल छथि आ अपन आलोचनामे ककरो निराला आ ककरो प्रसाद बनाबैत छथिन्ह मुदा मर्यादावश वा जे कारण हो पिताक रचनात्मकतापर ओ श्रद्धा तँ व्यक्त करैत छथिन्ह मुदा खुलि कऽ सोझाँ नै आबैत छथिन्ह। हम ऐठाम इएह कहब जे ओ निराला आ प्रसाद नै, ओ बूच छलाह, मैथिलीक बूच। हुनका मात्र ऐ रूपमे सम्मान दऽ हम मैथिली आलोचनाक तर्पण कऽ सकैत छी ।

कविक रचनात्मकताक दूटा संदर्भ आर अछि। कविक रचना 'अकाल' संभवतः नागार्जुनक हिंदी कविता 'अकाल और उसके बाद' क बाद भेलए। मुदा दुनूक दू संदर्भ आ दृश्य। नागार्जुन जाइ ठाम पशु पक्षी आ मानवक स्थितिक चित्र दऽ रहल छथि, ओइ ठाम बूच बाबू गुजराती उपन्यासकार पन्नालाल पटेलक रचना 'मानभीनी भवाई' जकाँ काल देवताक याद करैत छथि।

ई अकाल नहि महाकाल अछि
भूखक उक बान्हि नांगरिसँ
चारेपर ठोकैत ताल अछि।

....
बीसहूँ आँखि ओनारि दसानन
घुटुकि घुटुकि हिलबैत भाल अछि

बूच बाबू अपन एक अन्य कविता 'राम प्रवासी'मे रामकँ वनवासीक बदला प्रवासी कहैत छथि। मात्र ऐ शब्दक द्वारे ई कविता अपन पौराणिक केंचुलकँ त्यागि आधुनिकता दिस संक्रमित होइत अछि।

धिक धिक जीवन दीन अहाँ बिनु
बीतल बरख मुदा जीवै छी
जीर्ण-शीर्ण मोनक गुदड़ीकें
स्वार्थक सुइ भोंकि सीबै छी
निष्ठुर पिता पड़ल छथि घर मे
कोमल पुत्र विकल वनवासी
आउ हमर हे राम प्रवासी

जीता जी हुनकर कोनो किताब नै छपल। मरलाक बाद हुनकर ९८ टा कविताक संग्रह श्रुति प्रकाशनसँ आबि रहल अछि। निन्नानबेक फेरमे हमरा जनैत कवि कहियो नै पड़लाह। जिनगीक ऐश्वर्य आ प्रेमकँ कवि खूब नीक जकाँ भोगलाह। परन्तु ई सभ मृगतृष्णा बनि कविक जिनगीमे आबैत जाइत रहल-

कयलहुँ जहिना किछु आलिंगन
चुभि गेल अनेको वक्रशूल
उड़ि गेल गगन दुर्लभ सुगंध
झड़ि गेल धरा मकरंद प्रीत
सौन्दर्यक भूमि मरूभूमि भेल
रमणीय देवसरि सुखा गेल

कवि जिनगीकँ ऊँच-नीचक कविता जकाँ देखलखिन्ह अर्थात विभिन्न भाव आ रससँ परिपूर्ण। कोनो एक रस आ भावमे रमनाइ ओ नै सिखलन्हि। संभवतः काल देवता स्वयं हुनकर कीर्तिक सोझाँ आबि गेलाह अन्यथा हुनकासँ कम सामर्थ्यक कविगण बेशी यश, पुरस्कार आ सम्मानक भागीदार बनलाह। ई अभिशाप कविक कम आ मैथिली आ भारतीय साहित्य आ आलोचनाक बेसी अछि।

-रवि भूषण पाठक

२

बूच जीक कविताक *-मार्क्सवाद, ऐतिहासिक दृष्टि, संरचनावाद, जादू-वास्तविकतावाद, उत्तर-आधुनिक , नारीवादी आ विखण्डनवाद दृष्टिसँ अध्ययन संगमे भारतीय सौन्दर्यशास्त्रक दृष्टिसँ सेहो* **अध्ययन**

जेठी करेह:

बूच जीक कविता **जेठी करेह** कवितामे कवि कहै छथि जे ई भोरमे उधिआइ अछि, बर्खा हेठ भेलोपर उपलाइत अछि। ओकर खतराक बिन्दु बड़ड ऊपर छै तखन ओ किए अकुलाइत अछि। आ आखिरीमे कहै छथि जे बान्ह तोड़ि ई प्रलय मचाओत से बुझाइत अछि।ई भेल ऐ **कविताक सामान्य पाठ**। आब एतए एकरा **संरचनावादी दृष्टिकोण**सँ देखी तँ लागत जे करेह सवेरे उधिआइ अछि तँ आशा करू जे आन बेरमे ई नै उधिआइत होएत। बरखा हेठ भेने उपलाइत अछि मुदा से नै हेबाक चाही। इन्होर पानिक चमकब, मोरपर भौरी देब आ तकर परिणाम जे डीहक करेजकँ ई अपनामे समा लैत अछि।ओकर रेतक बढ़लासँ कविक धैर्य चहकै छन्हि। आब कने संरचनावादसँ हटि कऽ एकर **ऐतिहासिक विश्लेषण**पर आउ। ई नव युगक लेल एकटा नव अर्थ देत। खतराक बिन्दु जे कविक समएमे ऊँचगर लगैत हएत आब बान्हक बीचमे भेल जमा धारक मवादक चलते ओतेक ऊँच नै रहि गेल। से नव पीढ़ी लेल कविक कविता कविसँ फराक एकटा नव स्वरूप लऽ लैत अछि। आब कने संरचनावादसँ हटि कऽ **विखण्डनवाद** दिस आउ। विखण्डनवादी कहत जे संरचनावादीक ध्रुव दार्शनिक स्वरूप लैत अछि। बर्खा हेठ भेलै, तैयो उपलायब, बान्ह बनबैबला इंजीनियरक करेहकँ बान्हबाक प्रयासक बुरबकीक रूप लेब आ कविक करेह द्वारा बान्ह तोड़ि प्रलय मचेबाक भविष्यवाणी स्वयं कविक ध्रुवीकरणक स्थायी वा क्षणिक होएबापर प्रश्नचिन्ह लगेबाक प्रमाण अछि। आब फेर कने कविताक ऐतिहासिकतापर जाउ। **जादू-वास्तविकतावादी** साहित्यमे भूतकालमे गेलापर हम देखै छी जे ६०क दशकमे बान्ह बनेबाक भूत सवार रहै, बान्ह, ऊँच आ चाकर, जे धारकँ रोकि देत आ मनुक्ख लेल की-की फाएदा ने करत। ओइ स्थितिमे जादू-वास्तविकताबला साहित्यक पात्र लग ई कविता जाएत तँ ओ ऐ कविताक तेसरे अर्थ लगाओत। कविक अस्तित्व ओतए खतम भऽ जाएत आ शब्दशास्त्र अपन खेल शुरू करत। जादू-वास्तविकताबला साहित्यक ओ पात्र जे भविष्यमे जीयत तकरा लेल सेहो ई एकटा अलगे अर्थ लेत, ओ धारक खतराक निशानक ऊँच होमयबला गप बुझबे नै करत आ कविक कविताक भावक ताकिमे रहत। मुदा **विखण्डनवाद** तकरा बाद अपने जालमे फँसि जाएत, बहुत रास बात नै रहत मुदा बहुत रास बात रहत। बरखा रहत, धार सेहो परिवर्तित रूपमे रहबे करत, रौदमे ओकर पानि इन्होर होइते रहत।उधियेनाइ आ उपलेनाइ रहबे करत।

स्वागत गान:

स्वागत गानक सामान्य पाठ- कवि सभक स्वागत कऽ रहल छथि मुदा मिथिलाक उपटैत धरतीक करुण क्रन्दनक बीच उल्लासक गीत कोन होएत। भ्रमर पियासल, फलक गाछ मौलायल तखन ई समारोही गोष्ठीसँ की होएत? कविताक संग लाठी आ रसक संग खोरनाठी लिअए पड़त। कविताक नीचाँमे सूचना अछि- विद्यापति स्मृति पर्व समारोह १९८४, ग्राम-बैद्यनाथपुर, प्रखंड-रोसड़ा, जिला-समस्तीपुरमे आगत अतिथिक स्वागत। ओ कालखण्ड मिथिलासँ पड़ाइनक प्रारम्भ छल। हाजीपुरमे गंगा पुल बनि गेल छल। विकासक प्रतिमान लागल जेना विफल भऽ गेल। पैघ बान्हक प्रति मोहभंग भऽ गेल छल। कृषिक आ कृषकक दुर्दशाक लेल बाढ़िक विभीषिका छल तँ स्थानीय फसिल आधारित औद्योगीकरण निपत्ता छल आ शिक्षाक अभियान कतौ देखबामे नै आबि रहल छल। आ ताइ स्थितिमे समारोही गोष्ठीक स्वागतक भार कविजी सम्हारने रहथि। **ध्वनि सिद्धान्त:** आनन्दवर्धन ध्वन्यालोकमे साहित्यक उद्देश्य अर्थकेँ परोक्ष रूपेँ बुझाएब वा अर्थ उत्पन्न करब कहैत छथि। ई सिद्धान्त दैत अछि परोक्ष अर्थक संरचना आ कार्य, रस माने सौन्दर्यक अनुभव आ अलंकारक सिद्धान्त।आनन्दवर्धन काव्यक आत्मा ध्वनिकेँ मानैत छथि। ध्वनि द्वारा अर्थ तँ परोक्ष रूपेँ अबैत अछि मुदा ओ अबैत अछि सुसंगठित रूपमे। आ ऐसँ अर्थ आ प्रतीक दूटा सिद्धान्त बहार होइत अछि। ऐसँ रसक प्रभाव उत्पन्न होइत अछि। ऐसँ रस उत्पन्न होइत अछि। न्याय आ मीमांसा ऐ सिद्धान्तक विरोध केलक, ई दुनू दर्शन कहैत अछि जे ध्वनिक अस्तित्व कतौ नै अछि, ई परिणाम अछि अनुमानक आ से पहिनहियेसँ लक्षणक अन्तर्गत अछि। आ से सभ शब्द द्वारा वर्णित होएब सम्भव नै अछि। **स्वागत गानक ध्वनि सिद्धान्तक हिसाबसँ पाठ:** *विद्यापति शिव स्वरूप मृत्युंजय मऽरल छथि* कहि कवि अर्थ आ प्रतीक दुनू सोझाँ अनै छथि। ध्वनि सिद्धान्तक न्याय दर्शन विरोध केलक मुदा उदयनक गाम करियनक कवि बूच जी दार्शनिक नै, कवि छथि। ओ ध्वनिक जोरगर संरचना सोझाँ अनै छथि- *हमरा सबहक अभाग अजरो भऽ जऽड़ल छथि,* आ *मात्र ई समारोही गोष्ठी सँ की हेतै ?* आगाँ ओ कहै छथि- *काव्य पाठ करू मुदा कान्ह पर लिअ लाठी, एक हाथ रसक श्रोत दोसर मे खोर नाठी*। ऐ प्रतीक सभसँ भरल ई कविता सुगठित रूपे आगाँ बढ़ैत अछि आ अभ्यागतक स्वागत करैत अछि। **मार्क्सवादी दृटिकोणसँ** देखलापर लागत जे कविक काजकेँ ऐ कवितामे काव्यपाठसँ आगाँ भऽ देखल गेल अछि। ऐमे सकारबाक भावक संग ओकरा फुसियेबाक, पुरान आ नव; आ विकास आ मरण दुनूक नीक जकाँ संयोजन भेल अछि। स्वागत गान अपन परिस्थितिसँ कटि कऽ आह-बाह करऽ लगैत तँ मार्क्सवादी दृष्टिकोणसँ ई निम्न कोटिक कविता भऽ जाइत (जकर भरमार मैथिलीक स्वागत आ ऐश्वर्य गान गीत सभमे अछि), मुदा कवि एकरा एकटा गतिशील प्रक्रियाक अंग बना देलन्हि आ ई मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ स्वागत गान बनि गेल।

बेटी बनलि पहाड़:

बेटी बनलि पहाड़ कविताक सामान्य पाठ: दुलरैतिन बेटी घेंटक घैल बनल छथि। बेटी अएलीह तँ उड़नखटोला चढ़ि कऽ मुदा हरि गरुड़ त्यागि कार माँगि रहल छथिन्ह। पैंतीस ग्राम सोना पुड़ेलन्हि मुदा आब बियाह रातिक खर्चा चाही आ बरियाती दस गाही अओताह; सौंसे बल्ब जड़ि रहल अछि मुदा माझे ठाम अन्हार अछि। दशरथ एको पाइ नै मँगलन्हि, रामो किछु नै बजलाह। इतिहास तँ कृष्णक लव मैरेजक छल मुदा तैसँ की। जनक वर्तमानमे हाहाकार कऽ रहल छथि। बेटाक कंठ बाप पकड़ने अछि आ घरे-घर बूचड़खाना बनल अछि आ गामे-गाम बजार लागल अछि। **बेटी बनलि पहाड़ कविताक समाजशास्त्रीय समीक्षा पद्धतिक दृष्टिसँ पाठ:** ई कविता काटर प्रथाक विरोधक कविता अछि। समाजमे ओइ कालमे (अखनो) काटर प्रथाक कारण उड़नखटोलापर चढ़ि कऽ आयलि दुलरैतिन बेटी बाप अपस्यांत छथि।

करूण गीत:

करूण गीत कविताक सामान्य पाठ: कोकिलक करुण गीत सुनि श्रवित लोचनसँ कुसमित कानन देखब! सुवर्णक सौर्य शिखरपर शान्ति सागरक सुलभ जीत! जहिना किछु आलिंगन करै छी अनेको वक्रशूल भोका जाइत अछि। सुषमा दू क्षणक लेल आयलि, (आ चलि गेलि!) प्रेमक मधु तीत भऽ गेल। रजनीक रुदन विगलित प्रभात! **करूण गीत कविताक रूपवादी दृष्टिकोणसँ पाठ:** *कुसुमित काननक श्रवित लोचन द्वारा देखब, श्रृंगार सेज पर ज्वलित मसानक रौद्र रूपक आएब आ सुवर्णक शौर्य शिखर पर - शांति सागरक सुलभ जीत* केँ देखू। भाषाक अनभुआर पक्षकेँ कवि नीक जकाँ उपयोग करै छथि। आ अहीसँ हुनकर कवितामे कवित्व आबि जाइत अछि। विरोधी शब्द सभक बाहुल्य आ संयोजनक अनभुआर प्रकृति शब्दालंकारसँ युक्त भाषा ऐ कविताकेँ विशिष्ट बनबैत अछि। फूलक शूल सन ढुकब आ एहने आन संयोजन ऐ कविताकेँ रूपवादी दृष्टिकोणसँ श्रेष्ठ बनबैत अछि।

गामे मोन पड़ैए:

गामे मोन पड़ैए कबिताक सामान्य पाठ: गाममे रोटी एकोण रहए आ बथुओ साग अनोन रहए मुदा तैयो कलकत्तामे गामे मोन पड़ि रहल अछि। करेहक पानि पटा कऽ मोती उपजाएब तँ बच्चा सभ बिलटत? हुगलीक बाबू रहब नीक आकि कमला कातक जोन रहब? ईडेन गार्डनसँ नीक कमला कातक बोन अछि, पति पत्नीकेँ ईडेन गार्डनमे माला पहिरा रहल छथि मुदा कमला कातक बोनमे तिरहुतनी अपन भोला लेल धतूर अकोन ताकि रहल छथि! **नारीवादी दृष्टिकोणसँ गामे मोन पड़ैए कविताक पाठ:** प्रवासक कविता अछि ई। तिरहुतनी अपन भोला लेल धतूर अकोन ताकि रहल छथि, आ भोला प्रवासमे छथि। **अस्तित्ववादी** दृष्टिकोणसँ

देखी तँ ई भोला अपन दशा लेल, असगर जीबा लेल, चिन्ता लेल अपने जिम्मेदार छथि।

सोन दाइ:

सोन दाइ कविताक सामान्य पाठ: सोन दाइक जीवनमे ने हास रहतन्हि आ ने विलास, मुदा से किएक? बाल वृन्द जा रहल छथि, नव युवको चलल छथि आ तकरा बाद बूढ़-सूढ़ गलि गेल छथि। तैयो किए विश्वास छन्हि सोन दाइकेँ? ऐ सभक उत्तर आगाँ जा कऽ भेटैत अछि, देसकोस बिसरि ओ प्रवास काटि रहल छथि। आ जौँ-जौँ उमेर बढ़तै कहिया धरि सोन दाइक घरमे वास हेतै।**नारीवादी दृष्टिकोणसँ सोन दाइ कविताक पाठ:** नारीक लेल वएह सिद्धान्त, किए ने ओ काव्येक सिद्धान्त होए, जे पुरुष केन्द्रित समाजमे पुरुष लोकनि द्वारा बनाओल गेल अछि, समीचीन नै अछि। सोन दाइ देसकोस बिसरि ककरा लेल प्रवास काटि रहल छथि?

अकाल:

अकाल कविताक सामान्य पाठ: अकालक वर्णनमे कवि नाङरिमे भूखक ऊक बान्हि ओकर चारपर ताल ठोकबाक वर्णन करैत छथि।अनावृष्टिसँ अकाल आ तइसँ महगीक आगमन भेल, तइसँ जड़ैत गामक अकास लाल भऽ गेल। भारतमे लंका सन मृत्युक ताण्डव शुरू भेल अछि मुदा ऐबेर **विभीषण**क घर सेहो नै बाँचत कारण ओकर मुंडमाल डोरी-डोरीसँ बान्हल अछि। माए भरि-भरि पाँज कऽ धरती पकड़ि रहल छथि। **दशानन** अपन बीसो आँखि ओनारि माथ हिला रहल छथि। **औचित्य सिद्धान्त:** क्षेमेन्द्र औचित्यविचारचर्चामे औचित्यकेँ साहित्यक मुख्य तत्व मानलन्हि। आ औचित्य कतऽ हेबाक चाही? ई हेबाक चाही पद, वाक्य, प्रबन्धक अर्थ, गुण, अलंकार, रस, कारक, क्रिया, लिंग, वचन, विशेषण, उपसर्ग, निपात माने फाजिल, काल, देश कुल, व्रत, तत्व, सत्व माने आन्तरिक गुण, अभिप्राय, स्वभाव, सार-संग्रह, प्रतिभा, अवस्था, विचार, नाम आ आशीर्वादमे। कंपायमान अछि ई ब्रह्माण्ड आ ई अछि कंपन मात्र। कविता वाचनक बाद पसरैत अछि शान्ति, शान्ति सर्वत्र आ शान्ति पसरैत अछि मगजमे। **अकाल कविताक औचित्य सिद्धान्तक हिसाबसँ पाठ:** *ई अकाल नहि, महाकाल अछि, भूखक ऊक बान्हि नाड़रि सँ, चारे पर ठोकैत ताल अछि* मिथिलाक काल-देशमे अकालक ई वर्णन कविक कविताक औचित्य अछि। रावण तँ उपटबे करत, विभीषण सेहो नै बाँचत।

तोहर ठोर:

तोहर ठोर कविताक सामान्य पाठ: पानक ठोर आ सुन्नरिक ठोर। सुन्नरि द्वारा बातक चून लगाएब आ कऽथक सन लाल बुन्न कपोल सजाएब। मुदा प्रेमक

पुंगी कतए? भोरक लाली सुन्नरिक ठोर सन, बिनु सुन्नरि व्याकुल साँझ जेकाँ। बधिक जे बनत सुन्नरिक वर तँ हम बनब विखण्डित राहु। स्वर्गोमे सुधा कम्मे अछि, तहिना सुन्नरिक ठोर सेहो कतऽ पाबी। सकरी मिल महान बनत जे हम विश्वकर्मासँ विज्ञान सीखब। आ ओइ मिलसँ बहार होएत माधुर्य। कुसियारक पाकल पोर सन सुन्नरिक ठोर अछि। पुनर्जन्ममे सेहो धान आ चिष्टान्न बनि सुन्नरि हम अहाँक लग आएब। मुदबा एतबा बादो शब्दसँ उद्देश्य कहाँ प्रगट भेल। **अलंकार सिद्धान्तक हिसाबसँ तोहर ठोर कविताक पाठ:** भामह अलंकारकेँ समासोक्ति कहै छथि जे आनन्दक कारण बनैए। दण्डी आ उद्भट सेहो अलंकारक सिद्धान्तकेँ आगाँ बढ़बै छथि। अलंकारक मूल रूपसँ दू प्रकार अछि, शब्द आ अर्थ आधारित आ आगाँ सादृश्य-विरोध, तर्कन्याय, लोकन्याय, काव्यन्याय आ गूढ़ार्थ प्रतीति आधारपर। मम्मट ६१ प्रकारक अलंकारकेँ ७ भागमे बाँटै छथि, उपमा माने उदाहरण, रूपक माने कहबी, अप्रस्तुत माने अप्रत्यक्ष प्रशंसा, दीपक माने विभाजित अलंकरण, व्यतिरेक माने असमानता प्रदर्शन, विरोध आ समुच्चय माने संगबे। बातक चून लगाएब अप्रस्तुत, कऽथक सन लाल बुन्न कपोल, पानक ठोर आ सुन्नरिक ठोर, भोरक लाली सुन्नरिक ठोर सन, कुसियारक पाकल पोर सन सुन्नरिक ठोर ई सभ उपमा कवि द्वारा प्रयुक्त भेल अछि। मुदा *कतऽ छह प्रेमक पुंगी हूक?* मे सादृश्य-विरोध अछि। *अहाँ बिनु व्याकुल वाटक माँझ* मे रूपक प्रयुक्त भेल अछि। **काव्यक भारतीय विचार:** मोक्षक लेल कलाक अवधारणा, जेना नटराजक मुद्रा देखू। सृजन आ नाश दुनूक लय देखा पड़त। स्थायी भावक गाढ़ भऽ सीझि कऽ रस बनब- आ ऐ सन कतेक रसक **सीता** आ **राम** अनुभव केलन्हि (देखू वाल्मीकि रामायण)। **कृष्ण** भारतीय कर्मवादक शिक्षक छथि तँ संगमे रसिक सेहो। कलाक स्वाद लेल रस सिद्धांतक आवश्यकता भेल आ भरत नाट्यशास्त्र लिखलन्हि। अभिनवगुप्त आनन्दवर्धनक ध्वन्यालोकपर भाष्य लिखलन्हि। भामह ६अम शताब्दी, दण्डी सातम शताब्दी आ रुद्रट ९अम शताब्दी एकरा आगाँ बढ़ेलन्हि। **रस सिद्धान्तक हिसाबसँ तोहर ठोर कविताक पाठ: रस सिद्धान्त:भरत:-** नाटकक प्रभावसँ रस उत्पत्ति होइत अछि। नाटक कथी लेल? नाटक रसक अभिनय लेल आ संगे रसक उत्पत्ति लेल सेहो। रस कोना बहराइए? रस बहराइए कारण (विभाव), परिणाम (अनुभाव) आ संग लागल आन वस्तु (व्यभिचारी)सँ। स्थायीभाव गाढ़ भऽ सीझि कऽ रस बनैए, जकर स्वाद हम लऽ सकै छी।**भट्ट लोलट:-** स्थायीभाव कारण-परिणाम द्वारा गाढ़ भऽ रस बनैत अछि। अभिनेता-अभिनेत्री अनुसन्धान द्वारा आ कल्पना द्वारा रसक अनुभव करैत छथि। लोलट कविकेँ आ संगमे श्रोता-दर्शककेँ महत्व नै दै छथि। **शौनक:-** शौनक रसानुभूति लेल दर्शकक प्रदर्शनमे पैसि कऽ रस लेब आवश्यक बुझै छथि, घोड़ाक चित्रकेँ घोड़ा सन बूझि रस लेबा सन। **भट्टनायक** कहै छथि जे रसक प्रभाव दर्शकपर होइत अछि। कविक भाषाकेँ ओ भिन्न मानैत छथि। रससँ श्रोता-दर्शकक आत्मा, परमात्मासँ मेल करैए। रसक आनन्द अछि स्वरूपानन्द। आ ऐसँ होइत अछि आत्म-साक्षात्कार। रस सिद्धान्त

श्रोता-दर्शक-पाठक पर आधारित अछि। ई श्रोता-दर्शक-पाठकपर जोर दैत अछि। बार्थेज संरचनावाद-उत्तर-संरचनावादक सन्दर्भमे लेखकक उद्देश्यसँ पाठकक मुक्तिक लेल लेखकक मृत्युकेँ आवश्यक मानै छथि- लेखकक मृत्यु माने लेखक रचनासँ अलग अछि आ पाठक अपना लेल अर्थ तकैत अछि। *लगौलह बातक पाथर चून* / आ *सजौलह कऽथ कपोलक खून* / विभाव अछि आ ऐ कारणसँ *देखि कऽ लहरल हमर करेज* अनुभाव माने परिणाम बहार होइत अछि। **स्फोट सिद्धांत:** भर्तृहरीक वाक्यपदीय कहैत अछि जे शब्द आकि वाक्यक अर्थ स्फोट द्वारा संवाहित अछि। वर्ण स्फोटसँ वर्ण, पद स्फोटसँ शब्द आ वाक्य स्फोटसँ वाक्यक निर्माण होइत अछि। कोनो ज्ञान बिनु शब्दक सम्बन्धक सम्भव नै अछि। ई भारतीय दर्शनक ज्ञान सिद्धान्तक एकटा भाग बनि गेल। अर्थक संप्रेषण अक्षर, शब्द आ वाक्यक उत्पत्ति बिन सम्भव अछि। स्फोट अछि शब्दब्रह्म आ से अछि सृजनक मूल कारण। अक्षर, शब्द आ वाक्य संग-संग नै रहैए। बाजल शब्दक फराक अक्षर अपनामे शब्दक अर्थ नै अछि, शब्द पूर्ण होएबा धरि एकर उत्पत्ति आ विनाश होइत रहै छै। स्फोटमे अर्थक संप्रेषण होइत अछि मुदा तखनो स्फोटमे प्राप्ति समए वा संचारक कालमे अक्षर, शब्द वा वाक्यक अस्तित्व नै भेल रहै छै। शब्दक पूर्णता धरि एक अक्षर आर नीक जकाँ क्रमसँ अर्थपूर्ण होइए आ वाक्य पूर्ण हेबा धरि शब्द क्रमसँ अर्थपूर्ण होइए।सांख्य, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा आ वेदान्त ई सभ दर्शन स्फोटकेँ नै मानैत अछि। ऐ सभ दर्शनक मानब अछि जे अक्षर आ ओकर ध्वनि अर्थकेँ नीक जेकाँ पूर्ण करैत अछि। फ्रांसक जैक्स डेरीडाक विखण्डन आ पसरबाक सिद्धान्त स्फोट सिद्धान्तक लग अछि। **स्फोट सिद्धांतक आधारपर तोहर ठोर कविताक पाठ:** आब उदयनक करियनक धरतीपर रहबाक अछैतो न्याय सिद्धान्तक स्फोट सिद्धान्तकेँ नै मानब कविक कविताकेँ नै अरघै छन्हि। *मने मे रहल मनक सब बात* कहि ओ *अलभ्य चित चोर* सँ सुन्नरिक ठोरक तुलना कऽ दै छथि।

उदयनक गामक कवि बूच कहै छथि *भऽ रहल वर्ण - वर्ण निःशेष, शब्द सँ प्रगटल नहि उद्‌ग्रेश्य;* एतए शब्दसँ नै मुदा स्फोटसँ अर्थक संप्रेषण कवि द्वारा तोहर ठोर आ ऐ संग्रहक आन कविता सभमे जाइ तरहेँ भेल अछि, से *संसारक सभसँ लयात्मक आ मधुर भाषा मैथिली* मे (यहूदी मेनुहिनक शब्दमे) विद्यापतिक बादक सभसँ लयात्मक कविक रूपमे बूचजी केँ प्रस्तुत करैत अछि आ मैथिली कविताकेँ ऐ रूपमे फेरसँ परिभाषित करैत अछि।

गजेन्द्र ठाकुर

अनुक्रम

सरस्वती वंदना

अधर हास करतल वर वीणा हंस वाहिनी परम प्रवीणा ।
श्वेत अंबरे परे शुद्धि दे, अपरे परमेश्वरि सुबुद्धि दे ।

भावक सर विश्वासक शतदल,
पर पसरल श्रद्धास्पद परिमल,
हस्त स्फटिक माल मनोहर
सहज तपस्विनी आत्म शुद्धि दे
अपरे परमेश्वरि सुबुद्धि दे ।

आसीना कल्पना हंस पर
पद सौन्दर्यक पंक वंश पर
व्योम नायिके कथा गायिके
हरू हमरो कुण्ठाबरूद्धि हे
अपरे परमेश्वरि सुबुद्धि दे ।

सींचू ज्ञान कमंडल जल सँ
पोंछू माँ प्रेमक आंचल सँ
उक्ति द्वार पर रसाहार
करबू त्यागू युग युगक क्रुद्धि हे
अपरे परमेश्वरि सुबुद्धि दे ।

गीत

राम मंत्रवत अहँक नाम जपि-जपि दिवस बितावै छी,
रातुक बीच चान पर तपि-तपि ध्यान लगावै छी ।

कहू अहाँ की आन हमर छी,
देहक रूसल प्राण हमर छी
हे पाथरक देवता जागू
अहीं एक भगवान हमर छी
हम निर्दोष फूल तैयो निरमाल बनावै छी,
रातुक................

जाहि बाट कें नित्य बहारी
हम तीतल आँचर सँ झारी,
जकरा अपना मे रखने अछि,
हमर आँखि ई कारी-कारी
आइ ताहि पर किएक अलसित गति सँ आवै छी
रातुक..........

हमरा लेल राजपद त्यागू
भवन छोड़ि कानन कें भागू,
पाछूक सीता सन सुन्नरि
दौड़ि पड़ि औ आगू-आगू,
प्यासल प्रेमक जलद मर्यादा किएक जगावै छी
रातुक.........

आऊ - आऊ हे प्रिय अभ्यागत
अछि पसरल हृदयासन स्वागत
प्रियतम अहँक पलकहुँ लकि सँ,
हमर जन्म जन्मान्तर जागत
लाऊ पखारि चरण नयन सँ जल छलकाबै छी,
रातुक......................

आउ हमर हे राम प्रवासी

आउ हमर हे राम प्रवासी
व्याकुल जनक, विह्वला जननी,
पड़ल अवधपर अधिक उदासी
आउ हमर हे राम प्रवासी? ।
धिक् धिक् जीवन दीन, अहाँ बिनु
बीतल बर्ख मुँदा जीवै छी
जीर्ण-शीर्ण मोनक गुदड़ीकेँ
स्वार्थक सूइ भोँकि सीबै छी

निष्ठुर पिता पड़ल छथि घरमे
कोमल पुत्र विकल वनवासी
आउ, हमर हे राम, प्रवासी।

दुर्दिन कैकेयी बनि कऽ
हे तात, अहाँकेँ विपिन पठौलनि
जाहि चार तर ठार छलहुँ
तकरापर दुर्वह भार खसौलनि
गृह विहीन बनलहुँ अनाथ हा,
हमर अभाग, मंथरा-दासी?
आउ, आउ हे राम, प्रवासी? ।

सोनक लंकापर विजयी भऽ
सीता संग कखन घर आएब?
बीतल विपिनक अवधि, अपन
अधिकार कहू कहिया धरि पएब?
परिजन सकल भोग भोगथि आ-
अहाँ बनल तपसी-सन्यासी।
आउ, आउ, हे राम, प्रवासी? ।

भरत अहाँ विनु पर्णकुटीमे
कुश आसनपर कानि रहल छथि
अहँक पादुकाकेँ अवधक-
ऐश्वर्योसँ अधि मानि रहल छथि
थाकल चरण चापि रगड़ब-
पदतल, बैसब पौथानक पासी।
आउ, आउ हे राम, प्रवासी?।

गौरी रहथु कुमारी

हएत नहि ई वियाह हे,
गौरी रहथु कुमारी?
बर बूड़ल बौराह हे,
धिया शुचि सुकुमारी
चामक सेज, कुगामक बासी
खन कैलाश, खनेखन काशी
लागथि बुत्त भुताह हे,
गौरी रहथु कुमारी
मुँण्डक माल, ब्याल तन मंडित
हस्त कपाल, मसानक पंडित
अनुखन बिक्खक चाह हे,
गौरी रहथु कुमारी
यध्यपि भाल सुधाकर, सुरसरि-
बहथि बेहाल चरण धरि झरि-झरि
तध्यपि धहधह धाह हे,
गौरी रहथु कुमारी
कोठी कोठी भाङ भकोसथि
कामरि-कामरि पानि घटोसथि
आनक की निरबाह हे,
गौरी रहथु कुमारी
भागलि, सखिगण सुनू कामेश्वर,
गिरिजा छथि रूसलि कोबर घर
जुनि बनु एहेन बताह हे,
गौरी रहथु कुमारी
सासुर धरि शिव भाभट समटू
परिछए दियऽ सुनू हे बङटू
बनलहुँ वर उमताह हे,
गौरी रहथु कुमारी

कपीश वंदना

हमरापर तमाम दुरगंजन
अपने छी महान दुख भंजन
हे हनुमान, अथाह धारसँ
पार कऽ दिअ, उद्धार कऽ दिअ
हमरा पार............
हम छी पतित पुरनका पापी
अएलहुँ शरण बनल संतापी
हे कपीश, हाथे धऽ हमरा
ठार कऽ दिअ, उद्धार कऽ दिअ
हमरा पार.........
पाबी अहँक अनमोल मंत्रणा
तखन सुकंठक कटल यंत्रणा
महावीर हमरोपर कनेक
विचार कऽ लिअ उद्धार कऽ दिअ
छोड़व नहि अपनेक आइ हम
दैत रहब रामक दुहाइ हम
“महामंत्र” केर हमरो गिरिमल-
हार दऽ दिअ, उद्धार कऽ दिअ
हमरा पार कऽ दिअ
उद्धार कऽ दिअ।

विरहिनी

रहि-रहि कऽ अहँक लेल देह फेर धयलहुँ अछि,
लागल अहींक एक ध्यान,
आऊ-आऊ रूसल हमर भगवान।

सहलहुँ कतेको हम जन्मक असह्य ज्वाल,
कहुना बितयलहुँ अछि मरणक बहु अंतराल,
मधुवन मे हे मोहन आइ हमर अवसर अछि,
राखि लिअ राधिका केर मान ।
आऊ...........

वृन्दावन कुहरैछ यमुँना कनैछ हाय,
गोदावरी आँचर तर छाती हहरैछ आइ।
गोकुल मे लाख-लाख मोन बहटारल हम
तैयो बड़ व्याकुल परान ।
आऊ.............

अहँक रूप राखि नैन युग-युग सँ जागलि छी,
मुरलीक मधुर वैन गुनि-गुनि कऽ पागलि छी।
परकीया पतिता हम प्रेमक पुजारिन कें,
नहि - चाहि गीताक ज्ञान।
आऊ........

जकरा छै लागल हा विरहक प्रचंड रोग,
तकरा की कऽ सकतै निष्कामी कर्मयोग।
हमरा लग अपने छी चीर नवनीत चोर
अंतः बनू बरू महान।
आऊ...........

अहँक लेल अपयश कें जीवन मे जोगि लेब,
पापो जौं लागत तऽ नरको कें भोगि लेब,
इच्छा नहि मृत्युक अपवर्गक आ स्वर्गक अछि,
अहँक छाड़ि चाही ने आन,
आऊ..................

स्वागत गान

आऊ - आऊ - आऊ सभक स्वागत करै छी,
नैन मे समाउ हृदयासन धरै छी ।
उल्लासक गीत कतऽ सगरो करूणा क्रन्दन,
उपटि रहल विपटि रहल मैथिलीक नन्दन वन,
भ्रमर झुण्ड प्यासल छथि विहग वृन्द बड़ भूखल,
मुरूझल छथि आम - मऽहु रऽसक सरिता सूखल,
बबुरे वन कवि कोकिल लाजे मरै छी ।
आऊ.........

विद्यापति शिव स्वरूप मृत्युंजय मऽरल छथि,
हमरा सबहक अभाग अजरो भऽ जऽड़ल छथि,
मात्र ई समारोही गोष्ठी सँ की हेतै ?
स्थिति जहिना तहिना संवत एतै जेतै
मुरदा जगाउ लाउ पैर पकड़ै छी,
आऊ.........

काव्य पाठ करू मुदा कान्ह पर लिअ लाठी,
एक हाथ रसक श्रोत दोसर मे खोर नाठी
पुरना किछु त्यागि - त्यागि पकड़ू किछु नऽव ढ़ंग
मोंछो पिजाउ बाउ श्रृंगारक संग - संग
अहाँ गीत गाउ मुदा हऽम हहरै छी,
आऊ.........

अहँक चपल चरण ॠतुराजक सूचक अछि,
अपने आत्मस्वरूप आशय तऽ 'बूचक' अछि,
दीन हीन साधन सभ सँ विहीन यद्यपि हम,
उद्वेलित श्रद्धा समुद्र नहि तरंगो कम ।
शर्वरीश स्पर्शक लेल हहरै छी ।

अभ्यागत आउ सभक स्वागत करै छी ।
आऊ..........

विशेष:- ई छल विद्यापति स्मृति पर्व समारोह 1984 (आयोजन स्थल - ग्राम - बैद्यनाथपुर प्रखंड रोसड़ा, जिला - समस्तीपुर) मे आगत अतिथिक स्वागत मे स्व. कविक ओहि कालक मैथिलीक दशा पर पीड़ा भरल प्रस्तुति ।

मातृ गीत

तोरे मुँस्की मे अभिनव आनंदक अनुपम देश गय !
तोरे दयादृष्टि मे नव नव सौन्दर्यक परिवेश गय

चिता भस्म तन, कर कपाल छल,
रूप अशुभ गर मुंडमाल छल,
सर्पकंठ, विष असन दिगम्बर,
मरूघट वास कतऽ आंगन घर ?
तोरे हाथ पकड़ि भिखमँगबा भोला भेला महेश गय ।
तोरे दयादृष्टि ....

माइक हाथ पकड़लनि बाबू,
ओहि हाथ पर हुनके काबू,
बेटो तऽ चरणक अधिकारी
उठलै तखन प्रश्न ई भारी,
तोहर हाथ पैर दु दुहू मे महिमा ककर विशेष गय ।
तोरे दयादृष्टि ....

शिशुक लेल आरामदेह
माइक शरीर मोमक चाही,
मक्खन सन कोमल करेज आ,
हास शरद सोमक चाही,
तखन किए पथरयलहुँ धयलहुँ अपन पाथरक भेष अय ।
तोरे दयादृष्टि ....

सोन दाइ

रहतौ ने हास, बहि जेतौ विलास गय,
दुइ दिवसक जिनगी सँ हेवें निराश गय ।

भरमक तरंग बीच मृगतृष्णा जागल छौ,
मोहक उमंग बीच, प्राण किएक पागल छौ,
चलि जेतौ सुनें कंठ लागल पियास गय ।
दुइ..........................

बाल वृन्द जा रहला, नव - नव युवको चलला,
बूढ़ - सूढ़ जरि - मरि कऽ माटि तऽर परि गलला,
तैयो छौ अपना पर व्यर्थ विश्वास गय ।
दुइ..........................

अपना कें चीन्हे तों नाम तोहर "सोन दाइ"
टलहा सँ मेझर भऽ मूँह छौ मलीन आइ
देश कोश विसरि - काटि रहलें प्रवास गय ।
दुइ..........................

नेनपन चलि भागलि आब इतिवस्था एतौ,
कहें कनेक गुनि धुनि कऽ तकर बाद की हेतौ,
कहिया धरि कऽ सकबें पर घर मे वास गय ।
दुइ..........................

हील हाइ - हाइ

खुडियौलक कसि - कसि कऽ नीपल करेज कें,
धुरियौलक धीपल मनक हाइ वेज कें,
कहऽ पड़ल आइ -
नील - नील चप्पल केर हील हाइ - हाइ ।

बेकसूर केश अधगेड़ें सँ काटल छै,
कोन घसबहबाक हार्थे छपाटल छै,
अथवा हय दाइ -
ठढ़िया गेन्हारी कें चरि गेलै गाइ ।

पर्स लटकौने कमरच्छा सँ आयलि छै,
नवसिक्खू डानि जकॉ भूखलि पियासलि छै,
बचबऽ हौ भाइ -
हऽम एक दूइये ओ आखड़ अढ़ाइ ।

एखनो धरि भौजी कें लजवन्ती जगिते छनि,
बूढ़ि भेली भैया लग लाज कते लगिते छनि,
सुनहक ढ़ोढ़ाई -
देखिये कऽ खा लै छी, घिबही मिठाइ ।

मिथिलाक बेटी

सीता कें सितिया बनौलक सौभाग्य हमर,
रघुपति कें महुअक करौलक अनुराग हमर,
मिथिला केर धरती अकाशे सँ ऊँच जतऽ
जगदम्बे दुलरैतिन दाइ,
जतऽ पुरूषोत्तम रामे जमाइ ।

हमर उर्मिला सनि जनमलि कक्कर कन्या,
जकरा सँ तिरहुत की ? अवधो भेलै धन्या,
कोन सतवंती सँ संवल लऽ लखन लाल,
काले पर कयलनि चढ़ाई ।
इहो बात मने मोन पड़ल आइ ।

सूर्यवंश वैभव लग तुच्छ इन्द्रआसन छल,
ताहि त्यागि योगासन पूर्ण अनुशासन छल,
भरत भक्ति दिव्य दीप जगमग जग कऽ उठलै,
माण्डवी केर सेवा सलाइ ।
वास लेला नंदिग्रामे जमाइ ।

अखिल भुवन विजयी भऽ शंकर आदिगुरू बनलनि,
महिषी मे आवि मंडन कें मर्दित कयलनि
मुँदापस्त भऽगेलनि मिथिलाक बेटी सँ
शारदा बनलि भारती दाइ ।
गर्वित मिथिला भूमि आइ ।

जेठी करेह

गय जेठी करेह तोँ सवेरे उधिआइ छेँ ।
वरखा तऽ हेठै भेलै अनेरे उपलाइ छेँ ।

तोरो वाटर वेज बनल छौ,
डेभलॉप मेन्टक डेज बनल छौ,
बहुत ऊँच खतराक विन्दु गय,
एना किए अकुलाइ छेँ ?
गय ....

ई इन्होर पानि चमकै छौ,
मोर - मोर पर भौरी दै छौ,
काटि - काटि डीहक करेज केँ,
तऽरे तऽर समाइ छेँ ।
गय ....

बहकल तोहर रेतक धक्का,
चहकल हम्मर धैर्यक पक्का,
सत्यानाश सभक कऽ देवेँ
आवै छेँ आ जाइ छेँ,
गय ....

जत्र - तत्र भऽ जेतौ मौँका,
इंजीनियर बनतौ बुरिबौका,
वान्हि तोड़ि कऽ प्रलय मचेवेँ
एहने दाइ बुझाइ छेँ
गय ....

ऊँ नमः शिवाय

श्याम छटा पर राधा गंगा धार देखू बहिना,
वाम जटा तर वामा केर श्रृंगार देखू बहिना ।

वदन मनोहर कुंद ईन्दु सन
भुवन वृत्त केर मध्य विन्दु सन,
जड़ चेतन मोहक मृदु मुँस्की
लऽ रहलाह विक्ख केर चुश्की,

लुटा रहल छथि अमृत केर भंडार देखू बहिना ।
श्याम छटा ....

दीपित कुंडल लोल - लोल अछि,
प्रति विम्बित दुहू कपोल अछि,
सर्पराज केर छत्र मनोहर,
ममता मे विभोर डमरू धर,

कर त्रिशूल उर उरगक गिरिमल हार देखू बहिना ।
श्याम छटा ....

केहरि छालक पट विभूषित तन,
चंद्रालं कृत शिव प्रमुँदित मन,
वाम अंक गिरिराज कुमारी,
गर लटकल गणेश भयहारी

हिनके शरणागत सगरो संसार देखू वहिना ।
श्याम छटा ....

मणिद्वीपक महरानी

अयली जगदम्बा दुर्गा देवी कल्याणी अय,
मणिद्वीपक महरानी अय !
नाऽ ऽ ऽ।

सध्यः सुधा सिन्धु स्नात, मांजल गंगा जल सँ गात,
सेवक खातिर तजलनि नवरतनक रजधानी अय,
मणिद्वीपक ....

टपि कऽ अट्ठारह प्राकार देवी भऽ गेली साकार
सभकेँ सुना रहलि छथि अप्पन अभयावाणी अय,
मणिद्वीपक ....

हरि पीताम्बर सँ पद झारथि,
विधि सुरसरि सँ चरण पखारथि,
तरबा रगड़ि रहल छथि, रहि - रहि शंकर ज्ञानी अय,
मणिद्वीपक ....

महिषासुरक आव की डऽर, माता छाड़ू सिंहक भऽर,
लोके राच्छस भऽ कऽ कऽ रहलै मनमानी अय,
मणिद्वीपक ....

भदैया होली

डीहो धरि डूबल जखन बुर्ज बालुका पंक ।
रंग कोना पकड़त कहू तखन होलिका अंक ।
असली होरी बाढ़ि विच माँचल छल नैहऽर,
आङी डूबल घऽर मे, साड़ी भासल चऽर ।
फगुओ सँ भऽ गेल अछि, अधिक नीक भदवारि,
बूढ़ी पत्नी बेड़ पर कोरा मे नव सारि ।
भौजी कहलनि हुलसि कऽ लाउ लगा दी रंग ।
तेवर तेसर नयन लग, पसरल अजर अनंग ।
अपने छी परदेश मे हम छी बान्हे पऽर ।
यौवन खतरा बिन्दु लग, देह करय थर - थऽर ।
प्रेमक जल नेपाल सँ छूटल अछि चलि आउ ।
चैते मे डूबब पिया, शीघ्र नाव बनवाउ ।
डिम-डिम ढ़ोलक ढ़ेंप सँ छिटकल देहक पानि ।
उज्जर केश अबीर तर, बुढ़ियो भेलि जुआनि ।
मंत्री उड़थि अकाश मे, पब्लिक गेल पताल ।
धरती पर नेता लोकनि कऽ रहला रंगताल ।
सम्मत जहिना जड़ि रहल तहिना जड़ल करेज ।
दुहू जीव कछमछ करी पड़ल उपासक सेज ।
भोजन पैकेट पानि मे, गूड़ चूड़ा सभ गूम ।
फाउन्टेन पेनक धार मे भासल बूट गहूम ।
टूटल बलुआहा जखन खसला भीम उतान ।
अर्धांगिनीक चरण पकड़ि बचौलन्हि कहुना जान ।

वनिवासक अंत

घुरल आव अवधक दिवस भाग जागल,
बुड़ल नाव देखू नदी कात लागल ।
भरथि कान हनुमान संवाद अमरित,
भरत भऽ रहल छथि मगन मोन तिरपित,
विरागी हृदय भाव अनुराग जागल ।
बुड़ल नाव..............

नगर आबि रहलनि लखन राम - सीता,
प्रजा कंठ गीता नृपक प्राण प्रीता,
विगत कालरात्रिक पहर प्रीत जागल ।
बुड़ल नाव..............

उठू तीनु जननी नयन नोर पोछू,
सुनू कैकेयी त्यागु परिताप सोचू,
उड़ल प्राण बहुरल पुनः गात लागल ।
बुड़ल नाव..............

प्रमोदी चमन वर्ख - वर्खक सुखायल,
हुलसि आइ पनकल विहंसि कऽ फुलायल,
मृगक अक्षि अपलक विहग प्रेम पागल ।
बुड़ल नाव..............

माला

सुरभित अहँक सिनेहक माला ।
जनम - जनम जपि रहब विपटतर,
राखू बन्न अपन मधुशाला ।
देवि, सुखक परबाहि न हमरा,
मिलनक अल्पो आहि न हमरा
हम नर दुःखकाटब धरती पर,
अपने बनलि रहू सुरवाला ।
सुन्दरि अहाँ अकाशी गंगा,
हम भूमिक प्यासल भिखमंगा ।
युग-युग बरू बौरायब मरू मे -
अइँठायब नहि पावन प्याला ।
सुरभित अहँक सिनेहक माला ।
नहि श्रृंगार रौद्र हुंकारे ।
हम एहि पार, अहाँ ओहि पारे
दुहुक बीच कठोर कर्तव्यक-
भरल अथाह भयंकर नाला ।
सुरभित अहँक सिनेहक माला ।

जागरण गान

असम, वंग पंजाब, गुजरात जागल ।
अहीं टा पड़ल छी उठू औ अभागल ।
सुरूज त्यागि आयल निशा कें उषा मे,
खिड़ल जागरण ज्याति दऽशो दिशा मे ।
सगर श्रृंग - सागर धरिक नित्र जागल !
अहीं टा पड़ल छी उठू औ अभागल ।
चिकरि हँसि रहल स्यार सिंहक दशा पर ।
चलल बकगणक हंस पर क्रुर थापर ।
निठुर काक कर सँ पिकक कंठ दागल,
अहीं टा पड़ल छी, उठू औ अभागल ।
विदेहक सुतक देह दुर्वेह बनल अछि ।
ग्रसित कऽ रहल मैथिली कें अनल अछि ।
परक लेल दर्शन अपन आँखि लागल,
अहीं टा पड़ल छी उठू औ अभागल ।
हरण भऽ रहल अछि हमर मीठ बयना ।
कोना कऽ सिखत आन बोली ई मयना ।
विवश अछि वधिक हाथ सँ ठोर तागल ।
अहीं टा पड़ल छी उठू औ अभागल ।
कतऽ पितृ स्वर अछि कतऽ मातृवाणी ।
फटऽ जा रहल जीह बचबू भवानी ।
बनब गोर ई गुनि हमर प्राण पागल ।
अहीं टा पड़ल छी उठू औ अभागल ।
बहुत भेल हे आब ककरो ने मानू !
निकसि द्वारि प्राचीन तरूआरि तानू ।
अहह जाहि मे युग युग मे जंग लागल,
अहीं टा पड़ल छी उठू औ अभागल ।

मिथिलाक दुःदशा

नकशा सँ मिटा रहल मिथिलाक नाऊँ गय ।
कतऽ हमर पीढ़ी अछि कतऽ हमर ठाँऊ गय ।
भारत सँ भिन्नो बऽ बनलै बंगाल देश,
मुदा अपन देशे मे दावल मिथिला प्रदेश,
राज्यक की बात कठिन पाँचो टा गाऊँ गय ।
कतऽ हमर ....

हमर अमर षड़दर्शन हमर अचर साधु संत,
हमर अजर वन उपवन हमर अपन वर बसंत,
कवि कोकिल निकट काक करै काउँ - काउँ गय ।
कतऽ हमर ....

लोकवेद जागि रहल ऑंघायल नेता छथि,
अपने मे लड़ि - लड़ि कऽ घायल विजेता छथि,
पूछत के हाल दशा ककरा सुनाऊँ गय ।
कतऽ हमर ....

महिषी वा करियन हो, वाजितपुर मंगरौनी,
सरिसब सँ चौमथ धरि बनला सभ क्यो मौनी,
देशक सभ सँ दरिद्र मैथिल कहाँऊ गय ।
कतऽ हमर ....

तोहर ठोर

कि जहिना कुरकुर पानक ठोर ।
कि तहिना सुन्नरि तोहर ठोर ।
लगौलह बातक पाथर चून ।
सजौलह कऽथ कपोलक खून ।
कि रहलह एक्के बातक चूक,
कतऽ छह प्रेमक पुंगी टूक ?
कि जहिना लाली पसरल भोर ।
कि तहिना सुन्नरि तोहर ठोर ।
देखि कऽ लहरल हमर करेज,
त्यागि अयलहुँ उदयाचल गेह ।
अहाँ बिनु व्याकुल वाटक माँझ ,
सुमुखि भऽ रहल जीवनक साँझ ।
कि जहिना वक्र सुधाकर गोर ।
कि जहिना सुन्नरि तोहर ठोर ।
पिपासित आयब अहँक दुआरि,
प्रेम पीयूष पीयब झटढ़ारि,
बधिक जँ बनत अहँक बर बाहु
तऽ हमहूँ बनव विखंडित राहु,
कि जहिना सुधा स्वर्ग मे थोर,
कि तहिना सुन्नरि तोहर ठोर ।
सीखि विश्वकर्मा सँ विज्ञान,
बनायब सकरी मिल महान ।
भरब माधुर्यक कोषागार,
सेहंतित भऽ जायत संसार ।
जेना कुसियारक पाकल पोर,
कि तहिना सुन्नरि तोहर ठोर ।
बनव हम पुर्नजन्म मे धान,
धान सँ भऽ जायब चिष्टान्न ।

पड़ब पुनि अहँक प्रतीक्षापात
अछिंजल सँ सद्यः स्नात ।
जेना छाल्ही साजल नव खोर ।
कि तहिना सुन्दरि तोहर ठोर ।
भऽ रहल वर्ण - वर्ण निःशेष,
शब्द सँ प्रगटल नहि उद्‌ये्श्य ।
मने मे रहल मनक सब बात
अनल मे पड़ल नवला जल गात ।
जेना आगू अलभ्य चित चोर ।
कि तहिना सुन्नरि तोहर ठोर ।

नचारी

गाबैत चलल छी बमबम,
नाचैत चलल छी छमछम
लगबैत ताल दुलकल डेगक
सजवैत स्वरक नव सरगम ।
कॉवरि मे आबह गंगे
तोँ लागह हमरा संगे
लऽ चलह जतऽ कैलाशी

छथि चिता भूमि सन्यासी,
हे करूणामयि दुख भंगे,
देखबैत चलह पथ हर दम ....
प्रेमक मस्ती मे भासल
शंकर छथि परम पियासल
श्रद्धा केर धार बहाबह
विश्वासक पात्र बनावह
बौरहबा अधिक उपसाल
हुनका संतुष्ट करब हम .....
कंठे मे पचल हलाहल
छाती पर काली बान्हल
पदतल तर विश्वक वैभव
ई महिमा हमरो जानल
छथि आशुतोष औंघायल
तेँ डमरू बजबह हरदम ......
मानल हम शरणागत छी,
तैयो तेँ अभ्यागत छी
स्वागत कऽ दहक यथोचित
साधक छह चरण समर्पित
अपने कंजूस कहयबह

करूणा करबह जँ कमसम ।

सुनू आब मन जेहन लगैए

सुनू आब मन जेहन लगैए-
जिन्दाबाद रहय गयघट्टा,
रानी परती मुँरली छौनी,
कछमछ कऽ कऽ राति बितावी,
बान्हि धोधि पर दनही तौनी,
धन्य हऽम छी फल्लाँ बाबू जजिमनिके मे क्षुधा जगैए ।
सुनू आब मन जेहन लगैए ।

अपना घर मे रखने नहि छी,
कप्प गिलासक फूटलो टुकड़ी,
बहराइछ पावनि तिहार मे
मोरा मूनल गूड़क चुकड़ी
धन्य - धन्य छथि मास्टर साहेब जेँ ओ छथि तेँ चाह चलैए ।
सुनू आब मन जेहन लगैए ।

मूड़क नहि परवाहि रहल अछि,
शूलि उठय सूदिक कपचन मे
पाइ पाइ केँ जोड़ि आइ धरि
सेठ कहयलहुँ एहि जीवन मे
धन्य हऽम छी फल्लाँ बाबू ओहो धन्य नोत जे दैए ।
सुनू आब मन जेहन लगैए ।

बाहर सँ जेहने बलबुतगर,
भीतर सँ तेहने पनिमऽरू,
सज्जन हम जेहने दलानपर
आंगन मे तेहने दुरजऽरू

धन्य हऽम छी फल्लाँ बाबू बाढ़निये सँ देह झरैए।
सुनू आब मन जेहन लगैए।

नोन मात्र कीनी दोकान मे
से्हो जजिमानी ढ़ेबुआ सँ
मोन पड़य नहि किनने होयब,
हम देहक सूतो देबुआ सँ
धन्य हऽम छी फल्लाँ बाबू खर्च देखिकऽ मांस गलैए।
सुनू आब मन जेहन लगैए।

समधिक हाथे देल गेल छल,
हमरो आदर्शक गरदनिया
बेटा मंगनी बिका गेल हम
बनि कऽ रहलहुँ बुरबक बनियाँ
धन्य हऽम छी फल्लाँ बाबू अखनो रहि-रहि चोन्ह अबैए ।
सुनू आब मन जेहन लगैए ।

गहवर जननी केर

चमकि रहल चकमक औ, गहवर जननीक ।
देखिते टूटल भक औ गहवर जननीक ।
गुंबज गगन दिशा देवाल अछि,
पंडा बनि कऽ ठाढ़ काल अछि
चान सुरूज दीपक औ गहवर जननीक ।
पदतल परल स्वयं शिव शंकर
नारायण सूतल सुअंक पर
विधि व्याकुल ठकमक औ गहवर जननीक ।
गगनक गंगा चन्द्रकूप अछि
उषा किरण ओढ्ढल अनूप अछि
सकल भुवन पूजक औ गहवर जननीक ।
टप - टप सुधा चरण सँ चूबय
वरद हस्त सुत मस्तक छूबय
फलप्रसाद परिपक औ गहवर जननीक ।

भगवती वंदना

जनमि - जनमि कऽ बहुत भटकलहुँ
सभदेवक डगरिया ।
आयल छी आखिर उदास भऽ,
अम्ब अहींक दुअरिया ।

अहँक कोर मे विष्णु सुतल,
सम्मुख ब्रह्मा कानैत छथि ।
अहींक शक्ति बिनु स्वयं शिवो,
अपना कें शव मानैत छथि ।

आन देवक बात कोन सभ,
बनि गेला पमरिया ।
जनमि ....

प्रलय काल मे जीवक संग,
भगवानो कें सुतवैत छह,
तमसा देवि शक्ति तोरे सँ
देव दनुज पावैत छह,
मोहगर्त ममतावर्तक ई,
जादू भरल नगरिया,
जनमि ....

दुर्भाग्यक आलस्य हटाकऽ
जगा दिअऽ नवचेतना,
सम्मोहित कऽ दियौ दुष्ट कें
भरू माँ भीषण बेदना ।
हे माता मृतपाय पुत्र पर, ढ़ारू अमृत गगरिया ।
जनमि ....

भौजीक अवाहन

कौआ माँझे घर बड़ेरी पर भोरे सँ कुचड़ै ।
भौजी अबिते हेती रॉची सँ सगुन उचड़ै ।

अपने भैया भात पसौलनि,
हमरो सँ किछु काज करौलनि,
बारी सँ तिलकोर पात किछु आनै 'बूच' रै ।

कौआ ....

दुःखी मोन कॅ पोटि रहल छथि,
कॉच दालि कॅ घोटि रहल छथि,
पुरूखो हाथे दलिघोटना वर बढ़िया उसरै ।

कौआ ....

जल्दी - जल्दी केश छटौलनि,
गुलुरोगनक तेल लगौलनि,
दहिन आँखि फड़कै छनि लागथि बर खुश रै ।

कौआ ....

भौजी औती ई रूसि रहता,
नोरे मे सभ व्यथा सुनौता,
हिनका खातिर आबि रहल छनि लेमनचूस रै ।

कौआ ....

अकाल

ई अकाल नहि, महाकाल अछि,
भूखक ऊक बान्हि नाड़रि सँ,
चारे पर ठोकैत ताल अछि ।1।

फूके सँ पताल खड़ड़ौलक,
अनावृष्टिक आगि लगौलक,
एहि मंहगी क प्रचंड पसाही सँ -
उनचास बसात जगौलक ?
हे देखह जड़ि रहल गाम घर,
आकाशे भऽ गेल लाल अछि ।2।

भारत आइ भेल अछि लंका,
बजि रहल अछि मरणक डंका !
बाँचि सकत एहि वेर विभीषणक
कुटी अछि बड़का शंका ।
डोरि - डोरि सँ बान्हल,
एहि वेरूक विभीषणक मुंडमाल अछि ।3।

आंगन - आंगन हैया दैया,
वाहिनिक कोर मरै छथि भैया ।
पूत परेम छाड़ि धरती कें,
भरि - भरि कऽ धरै छथि मैया ।
वीसहुँ आँखि ओनारि दसानन,
घुटुकि घुटुकि हिलवैत भाल छथि ।4।

नोर

हंसलहुँ एक बेर जीवन मे, बेरि - बेरि कनैत रहल छी ।
बसलहुँ एक बेर जीवन मे, फेर - फेर उजड़ैत रहल छी ।

चलि - चलि भटकि - भटकि कऽ कखनो,
कखनो कऽ हम दौड़ि रहल छी ।
एक बुन्न जीवन क लेल
मरि - मरि कऽ मरू मे बौड़ि रहल छी ।
अपन मोन कें उघबा कऽ आनक तन कें उछहैत रहल छी ।
बसलहुँ ....

एक - एक सायक क चोट कें,
गुनि - गुनि छोट ध्यान नहिं देलहुँ ।
बड़ कचोट चालनिक रूप मे,
देखि - देखि चुप्पे रहि गेलहुँ ।
ठोप - ठोप चारक चुआठ कें आँगुर सँ उपछैत रहल छी ।
बसलहुँ ....

शिल्पक छॉछ कल्पना पूरा,
भावक दही विचारक चूड़ा ।
आनलक जे बेगाड़ भूख मे,
पाबि रहल अछि खुद्दी गूड़ा ।
नवनीतक अछि लूट मुँदा हम छॉछी छोरक लैत रहल छी ।
बसलहुँ........................

गामे मोन पड़ैए

रोटी एक्के कोण गय
बधुओ साग अनोन गय,
तैयो कलकत्ता मे रहि रहि,
गामे पड़ैए मोन गय ।

गऽर गृहस्थी कलटि रहल अछि,
धीओ पूता विलटि रहल अछि,
अजुके मिथिला सँ चलि अबियौ,
एलै टेलीफोन गय ।

आन - आन सभ टलहा चानी,
रानी बनि बसलै राजधानी,
धूमि - धूमि कऽ भीख मंगै छथि,
हमर मैथिली सोन गय ।

खेते लग करेहक सोती
पानि पटा उपजायब मोती,
हुगली केर बाबू सँ बढ़ियाँ
कमला कातक जोन गय ।

ताकल हावड़ा सँ दमदम धरि
परतर नहि मोरतर वाली केरि
ईडेन गार्डेन सँ सुन्नर अछि,
कोशी कातक बोन गय ।
पड़लि पार्क माँडर्न बाला छथि ,
पतिए चढ़ा रहल माला छथि,
तिरहुतनी अपना भोला लय
ताकय धतुर अकोन गय ।

भगतालाभ

साधना - भावना
आँठी - गुद्दा
साधना क गंगा जे चललीह से -
चलिते रहलीह आ-
बिनु घूरल सागर मे समा गेलीह!
ई छल, भगीरथ प्रयास ।
हा! हन्त!
साधना क सेहन्ता क ई अंत!
रहि गेल भावना क जऽल
जे नहिऍ जा सकऽल ।
भरल रहल ओ आलय सँ सागर धरि,
सिनेहक भंगिमा पर एक बेर धूरऽ लेल,
सुअवसर पावि घूरल,
आ तहिया सँ -
गंगा लाल की हेतैक ककरो !
भऽ गेलनि गंगे कें -
भगतालाभ अर्थात् विद्यापति लाभ !

सिया सँ रामक परतर

मानै छी सुनियौ रघुवंशी पुरूष अहाँ बेजोड़ औ,
हमरा सिया सखी लग लेकिन लागै छी किछु थोड़ औ ।
अपने कें जन्मौलनि माता, सीता हमर सहज संजाता,
कतबो सुन्नर श्याम मुँदा छी, कतबो गुनगर राम मुँदा छी,
अपने नीलाकाश जानकी, लाली पसरल भोर औ ।
मादक दृष्टि कमल दल लोचन मुँस्की कामदेव मदमोचन,
नशा बनल चढ़ि रहल नेह अछि, बिसरल छी हम कतऽ देह अछि,
मुँदा सियाक दिव्य दर्शन मे अमृते केर बोर औ ।
धनुषा तोड़ल पाबि जुआनी, तहिये सँ छी नामी गामी,
बाउ अधिक जुनि बनू गुमानी ताहि धनुखा केर सुनु पिहानी
तकरा बाल्यावस्थे मे ई उठा लेलनि कऽ कोर औ ।
उच्च विचार आचरण सादा, सदिखन संयोगल मरयादा,
आइ कतऽ रहि गेल बपौटी, पिछरल चरण करीनक पौटी

फलक साधिका सीता हम्मर अपने फूलक चोर औ ।
हमरा सिया ....

गौरी बनलि जोगिनियाँ

रूसल पिआक गौरी बनलि जोगिनिया,
पुनि हर बरब बनव कनियाँ ।
सती विरह शिव मरूघट सेवल,
कयल भस्म अन्वेषण केवल,
बनि - बनि लावण्यक नोनिया ।
पर्ण सलिल खासो पुनि त्यागलि,
युग-युग पिय तप मे लय लागलि
भागलि योगेशक निनियाँ ।
पुरबिल प्रीत रहल नहिं झॉपल,
भेल प्रतीति सकल तन कॉपल,
बहल नैन प्रेमक पनियाँ ।
गौलक स्वर्ग तलातल नॉचल
उमा अमिय महिमा नम बाँचल,
जय हे कैलाशक रनियाँ ।

काली रूप वर्णन

माएक चरण कमल लाले लाल गय,
भाल अढ़ूल फूल आँचर पर,
उड़ियौलक परिमल लाले लाल गय ।
श्यामल तन झाॅपल झोंटक बिच,
बिहुंसल अधर विमल लाले लाल गय ।
लाले रंग लाल खप्पड़ अछि,
वरदायक करतल लाले लाल गय ।
दया द्रवित विगलित छाती पर,
मुंडमाल लटकल लाले लाल गय ।
उरसुमेरू उमड़लि पयस्विनी,
चुरूअक खून चुअल लाले लाल गय ।
ममतामय मन भयदायक तन,
भद्रकालिका नाम् कमाल गय ।

चलि अबियौ पटना सँ गाम

बी. ए. कैये लेलहुँ
एम. ए. ओ कऽए लिअ
नहि लिअ नौकरीक नाम
प्रियतम औऽऽऽ चलि आबि पटना सँ गाम

हमरा नहि चाही घरवैया नोकरिहारा
सिलिक नहि चाही नहि सोनक सिक्कड़ि गारा
करबे एक्के संझे बरू टुटली मरैयामे
दू नमरी धंधा हराम ।

अहाँ घास काटब, हम चूल्हि कें पजाड़ि लेब,
अहाँ हऽर लादब हम घऽर कें सम्हारि लेब,
हऽम आड़ि ठाढ़ि सजल रोहिणी नक्षत्र जकाँ
अहाँ हमर खेतक बलराम ।

रहतै ने रौदी ई आर्द्रा बरसि जेतै
पनि एतै परती ओ निश्चय कदबा हेतै
अहाँ धान रोपब ठेहूनिया दऽ दोहरि मे
जलखै मे गाड़ब हम आम ।

थाकल झमारल घुरि आयब मुँन्हारि साँझ
पाटी ओछायब हम हँसिते दुआरि माँझ
लक्ष्मी बनि तड़वा हम रगरब हे नारायण
घऽर हम बैकुण्ठी धाम ।

धन्य - धन्य मेहनतिक गंगा जे बहबै छथि,
अपने पसीना सँ धरती कें नहबे छथि,
खटि रहला भूखल पेयासे देहाते मे

हुनका दिय बिअनु विराम ।

श्रमक कोन मानि? जतऽ बुद्धिक विलास छै,
पेरा दलाल गाल श्रमक पेट घास छै,
दिल्ली कलकत्ता आ बम्बई केर बात की ?
छोटो शहर बदनाम ।

घूसखोर मच्छड़ उड़ीस जकॉ जीवै छै
शोणित तऽ ओ - अवशिष्ट पीवै छै
हड्डी सुखायल अछि तैयो ओ अधिकारी
खगले केर तीड़ै छै चाम ।

पहुना

हमरो नेने चलियौ, अहाँ अपन गेह पहुना ।
हमहूँ कऽ नेने छी, अहाँ सऽ सिनेह पहुना ।
अपने कें चाही वैदेही
हम सम देह एक ओ देही
हमरो तात बनल छथि देखू ने विदेह पहुना ।
हमरो ....

शून्य गगन केर श्याम घटा छी,
मरू पर उमड़ल दिव्य छटा छी,
मधुरी मुँस्की लागै विजुकी क रेह पहुना ।
हमरो ....

सभक जीवनक एक प्राण छी,
सगरो गगनक एक चान छी,
हहरै छाती जहिना सागरक रेह पहुना,
हमरो ....

हँसि हँसि अहाँ सँ नयन जुड़यलहुँ,
चलऽ काल हा ! ई की कयलहुँ
दशा कतऽ अछि मोन कतऽ ई देह पहुना
हमरो ....

बेटी बनलि पहाड़

गेलै कतऽ विवेक विचार
भेलै केहेन लोकाचार
हाथक फुलडाली सन बेटी बनलै
माथे परक पहाड़ ।

प्राणो सँ जे अधिक पियरगरि,
पोसलि गेली अंक मे भरि - भरि ।
काल्हुक ई दुलरैतिन बेटी,
आइ घैल बनि लागलि घेंटी ।
आगाॅ भोगक पोरवरि पाछाॅ अपमानेक इनार ।

बेटी अहाँ बेटों सँ बढ़िकऽ,
अयलहुँ उड़नखटोला चढ़िकऽ
अपने तों लक्षमिनियाँ देवी,
बापक मुँदा सुन्न छह जेवी ।
हे देखू हरि गरूड़ त्यागि कऽ मांगि रहै छथि कार ।
कम्मे दामे भीठ बुड़यलहुँ
सोना पैंतीस ग्राम पुड़यलहुँ ।
ब्याह रातिक खर्चा चाही,
बरियाती औता दस गाही ।
बाहर भीतर बल्ब जड़ै अछि माँझे ठाम अन्हार ।
मंगलनि दशरथ एक पाइ नहि,
बजला किछु रामो जमाइ नहि ।
श्री कृष्णक तऽ लव मैरेज छल,
हिस्ट्री हमर केहेन सुन्नर भल ।
मुँदा आइ वृष भानु जनक कऽ रहला हाहाकार ।
बेटा बनलै बेबस बकरा,
बापे कंठ पकड़लनि तकरा ।

जीवन जब्बह भेल मनुक्खक,
मानवता रहतै ककरा लग ।
घऽर घऽर मे बूचरखाना गामे गाम बजार ।

हमर जिनगी

बिनु घनश्यामक बेकार हमर जिनगी,
धिक - धिक जुआनी धिक्कार हमर जिनगी ।
मेवा सड़ि जाऊ, फऽल फूलो सभ उसरि जाउ,
मधुवन जड़ि जाउ नन्द राजभवन पजड़ि जाउ,
सूखल जमुनियाक धार हमर जिनगी ।
धिक - धिक जुआनी धिक्कार हमर जिनगी ।
भृकुटी पर क्रोध रहेँ हृदय मे भरल सिनेह,
मक्खन मन अर्पित अछि नोक - झोंक दही देह,
ककरा सँ करतै तकरार हमर जिनगी ।
धिक - धिक जुआनी धिक्कार हमर जिनगी ।
चोटी मे कस्तूरी एड़ी केसर कुमकुम
मलि मलि कऽ बौसथि ओ, हम तँ रूसलि गुमसुम
कतऽ एहेन पेतै दुलार हमर जिनगी ।
धिक - धिक जुआनी धिक्कार हमर जिनगी ।
आगि जकाँ दागि रहल चन्द्रमुँखी केर उपाधि
सोना सन देह हमर भस्म करब जोगसाधि
पड़ल गोर्वधन पहाड़ हमर जिनगी ।
धिक - धिक जुआनी धिक्कार हमर जिनगी ।
भवसागर घाटपरक ज्ञानी घटवार कृष्ण
कर्मक पुरान नाव धर्मक पतवार कृष्ण
प्रेमी बिनु केँ करतै पार हमर जिनगी ।
धिक - धिक जुआनी धिक्कार हमर जिनगी ।

नोतक प्रेमी

धैन हमर छी कक्का औ,
''नोतक प्रेमी'' पक्का औ ।
पेट बांगला देशक पोखरि,
दाँते बान्ह फरक्का औ ।

भरलो तौला लेल सुरूक्का,
धोधि बनल तरभुजिआ फुक्का ।
काकी बाजथि रौ रोग ढुक्का,
बाबी मारथि छाती मुँक्का ।

कसमकस्स गंजी पर परलै वित्ता भऽरि दरक्का औ ।
धैन..........

भरि कठौत एकसरे चाही,
सद्यः हुरने अछि दू - गाही ।
सून कऽ रहल भऽरल भनसा,
हा ! भगवान कतऽ ई मनसा?

उसनल अल्हुआ खाइत काल ईं छोडा दैत अछि छक्का औ ।
धैन..........

चिब बऽ काल सोहारी सुक्खा,
ठोर बनल सकरीक दुरुक्खा ।
पाकल दू किलो धरि आटा,
बट्टा भरि तरकारी भाटा ।

सभटा खाकऽ परसन लऽ मुँहबेने अछि दू फक्खा औ ।
धैन..........

एहि परेत कें कहू ने पित्ती,
ई शमसान घाट केर लुत्ती ।
सतत् रहै अछि दाँत चियारल,
मुँह लगैए कनसारल भारल ।

सुनिते लोट-पोट हँसि - हँसि कऽ खसला 'बूच' तरक्का औ ।
धैन.........

काकी केर आदेश निकललनि,
कक्का जी जजिमनिका चललनि ।
आगाॅ लऽ अंगोक अॅधमोनी,
अगवे मोटा - चोटा तौनी ।

ठिकम ठिक दुपहरिया ठहठह जेठक रौद कडक्का औ ।
धैन.........

अप्पन मिथिला

ज्ञान विचार भक्ति भावक भंडार अप्पन मिथिला ।
भोग बीच योगक निरमल संसार अप्पन मिथिला ।
ई एहनोटा बेटा पौलनि,
जे त्रिभुवन मे पिता कहौलनि ।
अंग्मेदिनी अपरा माया,
कोर आबि कऽ बनली जाया ।
ब्रह्माण्डक ई अद्भुत् चमत्कार अपन मिथिला ।
भोग ....

शुकदेवो ई महिमा जनलनि,
परमगुरू जनक कें मनलनि ।
भोगी कें देहोक मोह नहि,
योगी तमकथि तुम्मा रहि रहि ।
धरती की आकाशे केर घर-द्वार अप्पन मिथिला ।
भोग.............

जे सदैव सभ कें नचवै छथि,
आदि शक्ति माया कहवै छथि ।
सुक्खे से बनली तिरहुतनी,
भूमि लोटि कऽ भेली भुतनी ।
तिनके कयलनि रचि-रचि कऽ श्रृंगार अप्पन मिथिला ।
भोग.................

गौतम - कपिल - कणदि - अयाची,
उदयन सन आचार्य भेल छथि ।
मंडित हमरा कर्मशक्ति लग,
ज्ञानक पंडित हारि गेल छथि ।
न्याय दर्शनक सभसँ पैघ टघार अप्पन मिथिला ।
भोग.............

शास्त्र वैह' हम जे सुनवै छी,
''काव्य वैह'' - हम जैह गवै छी ।
परम सोहनगर मैथिल अंगना,
सभ सँ मिठगर देसिल बयना ।
कवि कोकिल विद्यापति कंठक हार अप्पन मिथिला ।
भोग................

आइ गरीब - मुदा फकने छी,
पथिया भरल मखानक लावा ।
बासमती चूडा सानल -
मिठ्ठूर अमौट गलि औलनि बाबा ।
भरल चङेरा, चूड़ा दहीक भार अप्पन मिथिला ।
भोग ....

गंगो दीदी चाह बनावथि,
कमला बेटी पान लगावथि ।
कोसी बहिना धान कुटै छथि,
बागमती सिदहा फटकै छथि ।
धऽरक लक्ष्मी विहुंसथि माँझ ओसार अप्पन मिथिला ।
भोग....................

युग परिवर्तन

चिडै चित्त आब अंडे उड़ैए,
गोनु मौन भोनुए कें फुड़ैए,
बुचना घऽर पकडलक बुचनी बनि गेलै बहरैया ।

औ बाबू औ भैया की भऽ गेलै ले बलैया ।

चोकटलि करिअम्मा सन कनिया,
सासु सुपक्क सिनुरिया ।
बेटा पड़ले गाम बाप छथि,
खुट्टा ठोकि खगडिया ।

लाजो लगैए कहय पड़ैए अनसोहाँत सभ सहऽ पड़ैए
मोछ उट्टा अधपै पौआ केशपकुआ सेर सवैया

औ बाबू औ भैया की भऽ गेलै ले बलैया ।

पति-पत्नी पौआ पासी छथि
फड़लनि छुच्छ उड़ीसे
अथवा देवक घरसँ आयल
खरदूषण दस बीसे।
क्यो पुक्के माँक सेजे तर,
क्यो पुक्के बापकक बेडेपर
घऽर लगनि सकरी टीशन सन सतत माल पलटैया
औ बाबू औ भैया की भऽ गेलै ले बलैया

एक्के धोती अहिरन पहिरन,
सएह पुरूष कहवै छथि ।
अझुका नेता खादी तर,
अंडरवीयर पहिरै छथि ।
एक पेरिए मे ई अकरहरि,

दुहू जीव एक्के रिक्शा पर
पिक्चर देखऽ चलला लऽ कऽ चानी केर रूपैया,

औ बाबू औ भैया की भऽ गेलै ले बलैया ।

सोझ साझ सभ संचमंच छथि,
नेङरे खूब नचैए ।
पी. एच. डी. सुनथि अवाक,
मुँरखहवे थैसिस दैए ।
लाल डोमघर कंठी बाना,
पंडित जी चलला पसिखाना
बूढ़ी माघ नहाथि जुआन कें जेठो मे जड़ैया ।

औ बाबू औ भैया की भऽ गेलै ले बलैया ।

वसन्ते - बिरहिनी

नव - नव पप्पल मे हँसलै पुरनी कचनार गय,
बूढ़ी महुओ तर लगलै - रऽसक पथार गय ।

मलय वसातक मंतर पड़लै,
विपटल हो ई आम मजड़लै,
चौबट्टी पड़का जुग जुगहा
पीपड़ नव पनकी सँ भड़लै
पिंकी कें पिक् कऽ रहलै, निक्की दुलार गय ।
बूढ़ी महुओ तर ....

बेली पॅजियाबय कनैल कें,
बेल नुकावय रसक घैल कें,
सरियाबय नव गठित गात कें,
गड़ियाबय पछबा बसात कें,
कदली कनिया कऽ रहलै घोघे उघार गय ।
बूढ़ी महुओ तर ....

शूल - शूल पर फूल बनौलनि,
खूब मालती मोन मनौलनि,
गम-गम कऽ उठलीह चमेली,
रूसलि चम्पा सासुर गेली,
विधवो सिम्मर पर लगलै सिनुरी बजार गय ।
बूढ़ी महुओ तर ....

मंगल कुशल कहू की वेशी ?
सपने मे अयला परदेशी,
चिर - पिपास पर छल - छल प्याली,
भागऽ लागल क्षुधा अकाली,
ओरक उस्सर पर खसलै रसवन्ती धार गय ।

बूढ़ी महुओ तर ....

रहलहुँ शेष राति भरि जागलि,
हुनक दोष की ? हऽम अभागलि,
रसक अथाह सिन्धु छल उछलल,
प्राण मुँदा बुन्ने ले विह्वल,
लग - लग अकाशे चन्ना धरती अन्हार गय ।
बूढ़ी महुओ तर ....

पतनी व्रता

तोरा सुक्खक खातिर हम की - की नें करबौ गय ।
बिना जान कें जीवौ प्राण अछैतो मरवो गय ।

तोरे नैहर घऽर बनायब,
कमर सारि सँ हऽर मंगायव,
बापक चौड़ी लेबौ बटैया,
उपजेबौ अन्न पानि रुपैया
देखि लिहैं तोहर ई कोठी मुनहर भरवौ गय ।
तोरा ....

बैंकक लोन सँ गाय अनायब,
तकरा पोसब खूब चरायव,
अपने हाथे दूहब भोरे,
चाह बनाकऽ देबौं तोरे,
तों पड़ले-पड़ले पिबिहें हम प्याली भरबौ गय ।
तोरा ....

जल्दी ए दडिभंगा जएबौ,
रंग - विरंगक अभरन लयबौ,
तैयो जँ समधान ने हेबें,
यैह ने हमरा पूब भगेबें,
बिनु टीकट पकड़ा कऽ अलिपुर जेहल पडबौ गय ।
तोरा. ....

अन्हर मारि

नक फकरो तऽ व्याहलि गेली,
मृगनयनी कुमारि छै ।
देखि लिअ औ नगरक लीला,
भारी अन्हर मारि छै ।

गाम - गाम मे लगनक मेला,
बऽर वरद बाछा बनिगेला ।
अपने बाबा करथि दलाली,
बाप डोलाबथि बटुआ खाली ।
जकरा जतेक अधिक छै पूजी, तकरे ततेक पुछारि छै ।
देखि...

मेडिकल इंजीनियर बालक,
छथिन महग सम सँ बेशी।
बान्हल छनि गरदाम गऽर मे,
देखाबथि अपन शान शेखी ।
टुटपुजियों कॉलेजियो सबहक ऊँचे - ऊँचे आड़ि छै ।
देखि...

धऽनक महिमा कते कहू औ,
बहुत लोक पाइक जनमल ।
ज्ञान विवेकक बात कतऽ छै,
जकरे टका सैह निरमल ।
सासु छुलाछनि बऽहु हिरोइन, शहर घुमक्करि सारि छै ।
देखि...

अपने भऽल पुरूष छी कतवो,
सुन्दरि गुनगरियो बेटी ।
नहि मानत ई बऽर पक्ष जँ,

खाली अछि द्रव्यक पेटी ।
कोबर गेलि बिलाड़ि मोंख पर रूपवती सुकुमारि छै ।
देखि...

आदर्शक सभ बात करै छथि,
अपना बेर कात ससरै छथि ।
गनबऽ काल गरीबो मनगर,
गनऽ काल सेठ पछडै छथि ।
जाहि घऽर "मैथिली" जनमलि मरघट्टी तकर दुआरि छै ।
देखि...

नैहर सासुर केर डगरा मे,
बेटी भाटा बनि गुडकै ।
उपरागक रोटी क संग,
अपना नोरक तीमन सुड़कै ।
सासुर सँ नैहर धरि नितः सुनिते अयलि गारि छै ।
देखि..

उदयनाचार्य

अभिनव अवध ललाम,
जतऽ उदयनक घरारी।
पावन करियन गाम,
जतऽ उदयनक घरारी । सिंहमात्र पशु आरो किछु नहि,
हम मनुष्य छी उदयन ई कहि ।
पौलनि विजय विराम,
जतऽ उदयनक घरारी ।
वर्णित अछि भावी पुराण मे,
परिशिष्टां के अछि प्रमाण मे ।
उतरल छल गोधाम,
जतऽ उदयनक घरारी । हीर गर्व के कयल विखंडित,
जे छल बौद्धक उद्भट पंडित ।
पसरल सगरो नाम,
जतऽ उदयनक घरारी ।
भक्ति भावना मूक बनल छल,
नास्तिकता बन्दूक बनल छल ।
थर - थर लोक तमाम,
जतऽ उदयनक घरारी । भेल सनातन पुर्नस्थापित,
हत् उत्साह बौद्ध अभिशापित ।
निर्भय चारू धाम,
जतऽ उदयनक घरारी ।
आओल माधव चमत्कार लऽ,
आचार्यक अंशावतार लऽ ।
पसरल ख्याति तमाम,
जतऽ उदयनक घरारी । आक्रोशित भऽ जगन्नाथ पर,
पौलनि हत्या दोष मुँक्तिवर ।
भेटल यश विश्राम,
जतऽ उदयनक घरारी ।

एक हाथ मे ज्ञान सुदर्शन,
तर्क गदा दोसर मे सदिखन ।
वाक्युद्ध अविराम,
जतऽ उदयनक घरारी । सूर्य पूब उगथि असत्य अछि,
उदयाधरित दिशा तथ्य अछि ।
नवदृष्टिक आयाम
जतऽ उदयनक घरारी ।
तेसर कर कमलक कुसुमांजलि,
चरिम मे शंखक किरणावलि ।
नर भऽ प्रगटल श्याम,
जतऽ उदयनक घरारी । आइ जतऽ अछि तरूवर पीपर,
छल एहीं ठाॅ आचार्यक घर ।
पर्णकुटी विच गाम,
जतऽ उदयनक घरारी ।
हंस भट्ट वेदान्त अरण्यक,
सिंहबनल पहुँचल मिथिला तक ।
छूटल सभ कें घाम,
जतऽ उदयनक घरारी । आगाॅ पूजा पुष्पक बारी,
पाछाॅ साग पात तरकारी ।
जीवन क्रम निष्काम,
जतऽ उदयनक घरारी ।
ओ बौद्धक विद्वान धुरंधर,
वैदिक कें ललकारि घरे घर ।
भेल जयी सभ ठाम,
जतऽ उदयनक घरारी । अर्थाभाव आत्मसम्मानी,
घर अन्हार किरणा बलिदानी ।
सम - यम नियम विराम,
जतऽ उदयनक घरारी ।
आबि गेल उदयन सँ भीरऽ,
लागल ज्ञानक गुद्दी तीरऽ ।

जहिना कुकुरक चाम,
जतऽ उदयनक घरारी । सकशास्त्र मे ई अजेय छथि,
दर्शन मे तँ अपरिमेय छथि ।
गर्वित ध्वनित खराम,
जतऽ उदयनक घरारी ।
तर्क - वितर्कक गोला छूटल,
प्रतिमा पुंजक ज्वाला फूटल ।
अविरल आठोधाम,
जतऽ उदयनक घरारी । एखनहुँ आस्तिकता उत्साहित,
कयलनि भगवत् भक्ति प्रवाहित ।
अनिरूद्ध उगन्त, बलराम,
जतऽ उदयनक घरारी ।

अपना कें ओ सिंह मानि कऽ,
लागल गरजऽ फानि फानि कऽ ।
निर्भय वारे आम,
जतऽ उदयनक घरारी । डीहक पाँजरि सुमन फुलाओल,
बुद्धिनाथ आ आरसी आओल ।
मणिपाठक केर ठाम,
जतऽ उदयनक घरारी ।
अरूण, तरूण, चन्द्रभानु, प्रवासी,
नमथि डीह लग मिथिला वासी ।
विकल जपै छथि नाम ,
जतऽ उदयनक घरारी । पीपर तर आचार्य गुप्त छथि,
तेज प्रखार यद्यपि शुशुप्त छथि ।
शतशः हमर प्रणाम,
जतऽ उदयनक घरारी ।

एना जुनि नहाइ
दाइ अय पोखरि एना जुनि नहाइ ।
अहाँ छोट सारि हमर,

अयलहुँ दुआरि हमर,
उचिते तेँ कहि दै छी आइ ।
दाइ ....

काछु जकाँ पुनटै छी,
माँछ गकाँ उनटै छी,
साँप जकाँ जुट्टी दहाइ ।
दाइ ....
आँचर घननी पत्ता,
तानल दू-दू छत्ता,
मंगनी मे भीजै छथि भाइ ।
दाइ ....

बौआ केँ टकटकी,
बच्चा केँ फकफक्की,
कक्का केँ भऽ गेलेनि बाइ ।
दाइ ....

भैया बान्हि कऽ बाना,
बनल छथि दीवाना
धपचट मे करता सगाइ ।
दाइ ....

काटरक परिणाम

रहतऽ की तिलकक ई पाय हौ,
कऽ लय बरू फुटानी ।
तोरो कुमारि चारि दाय हौ,
मोन पड़ि जयतह नानी ।

बेटा आ बहु केयो काजो ने देतऽ,
कुन्हरलि पुतोहु सभ कुन्नह सधेतऽ,
पिविहऽ मिरचाई देल चाय हौ,
कऽ लय बरू फुटानी ।

तोरो...........

जहिया सँ सेज तेजि उठलो ने जेतऽ,
पोते तोहर नाचि - नाचि खिसियेतऽ,
ढेपा दऽ कहतऽ ई लाय हौ,
कऽ लय बरू फुटानी ।

तोरो...........

टूअर कुकुर बूझि कौरा पठेतऽ,
तऽर तेल ऊपर सँ नोनों ने देतऽ,
दाँत च्यारि मरि जयवह भाय हौ,
कऽ लय बरू फुटानी ।

तोरो...........

बेटा बिकायल छह पिण्ड कोना देतऽ,
देबऽ जौं करतऽ तऽ पैठे ने हेतऽ
प्रेते बनि रहिहऽ ढोरहाई हौ,
कऽ लय बरू फुटानी ।

तोरो...........

छोटका छह बाँचल हौ आबो तऽ चेतऽ,
एहि पापे लोक परलोक दुहु जेतऽ,
समधिन सँ प्रेमक सगाय हौ,
कऽ लय बरू फुटानी ।

तोरो...........

कवि कोकिल - विद्यापति

जनिका सँ देसिल वयना, पौलनि परान गय ।
कवि कोकिल नामे तनिका, जानय जहान गय ।
मिथिलांचल मे अभिनव आशा,
पसरल घर - घर अप्पन भाषा ।
भाव करूण विचार श्रृंगारी,
मनमे विरति नयनमे नारी
प्रगटौलनि आँचर तर सँ शंकर भगवान गय ।
कवि..................................

मॉज सेज पर योगक छाया,
वर अथाह व्यक्तित्वक माया ।
उदर भिवलि पर बनल त्रिवेणी,
रूपवती लग तीर्थक श्रेणी ।
रीतिक कालरात्रि मे चमकल सृष्टिक दिनमान गय ।
कवि ....

वैन वसंत नैन मे भादो,
धार पवित्र कात मे कादो ।
जल मे रहितहुँ पुरनि पात सन,
मरूस्थली मे रसस्नान सन ।
गाबथि राधापर लेकिन, माधव पर ध्यान गय ।
कवि कोकिल.............

धन्य - धन्य विद्यापतिनगरम्,
विस्फीसुत सत् शिवम् सुन्दरम् ।
जड़ियो कऽ अवशेष बनल छथि,
मरि कऽ अमर महेश बनल छथि ।
देहरि श्रृंगारक कांचन मंदिर मसान गय ।
कवि ....

रौ घुरना

बात असले ई कहियौ, सुनेॅ रौ घुरना ।
हऽम विद्यापति तोंहीं हमर उगना ।

पानि कतवो चढेलियौ -
छेॅ पनिमऽरू ।
रऽस कतबो चटेलियौ -
छेॅ दिनजऽरू ।
आब छुटतौ की, तोहर ई चालि पुरना ।
हऽम ....

आइ बुलिबुलि कऽ बहुतो -
हम थाकि गेलियौ ।
लावेॅ चैकी उतारेॅ -
आबेॅ रे एलियौ ।
देह दाबेॅ, लगावेॅ रे जोड़ दुगुना ।
हऽम ....

मालिकिनी अनेरे -
खेहाड़ि देलखुन ।
दुःख हमरो अछि -
तोरा जे गाड़ि देलखुन ।
आंगनक कारकौआ, बनक सुगना ।
हऽम ....

काल्हि ‘‘बूचो‘‘ देखलकौ -
तोहर चमकी ।
हमरो पर चलौले -
ऐहेन बमकी ।
देख अयना मे लटकल केहेन घुघना ।
हऽम ....

एक पर सँ एक

ककरो सँ क्यो कम की गय,
सबहक बड़के बमकी गय ।
भुट्टी पहिने टीक पकडलक,
गरदनि दबलक नमकी गय ।

बेटा करय एक सिरसासन,
जानै बाप बेरासी आसन ।
पुतहुक हाथ कौर अरगासन,
सासुक मुँह कथौती वासन,
सोझकी ठोकय ताल ताहि पर
नेड़री झाड़ै झमकी गय ।

एक टकाक मडुओ चिक्कस,
बान्हि पतौरा रखलहुँ जेबी,
गहुम प्रसाद तेल चरणोदक,
विष्णुरूप डीलर कॅ सेवी,
परूँका जे भेलै से भेलै -
हेतै असली एमकी गय ।

परजा प्राण तेयागल नेता,
कहै जीवनक स्तर बढ़लै,
परसन दैत - दैत भनसीए,
अपने आब चूल्हि पर चढ़लै,
बुरिबक बुझौ विकास मुँदा ई -
थिकै बुखारक चमकी गय ।

जोन महग मालिक छै सस्ता,
भोजन बन्न जिलेबी नस्ता,
आगॉ सँ भऽ रहलै पक्का,

पाछा टाट टुटल चैफक्का,
मालकिनी मटकी मारै तऽ,
रहसै नौरिन छमकी गय ।

पोता हाथ सुपक्क सिनुरिया,
बाबा माँगथि रऽसक गाड़ा,
मोन पड़नि कोबरक खीर औ,
पड़तनि पिण्ड लहरतनि सारा,
बूढ़ी कें लटकनि दू जुट्टी,
कटलै केश जुअनकी गय ।

अजुकी दाइ

अजुकी हम दाइ छी,
अधिक अगुताइ छी,
अहाँ बाट ताकू हमहीं विदेश जाइ छी ।
राखि लिअ अपन चूल्हि खापड़ि ई घऽर द्वारि ।
साँझ दियऽ अपने सँ आंगन मे दीप बारि ।
अहँक चार खरड़ल हम लहरल सलाइ छी ।
अजुकी ....

व्यर्थ भेल सिनुरदान कोबर घर सूनसान ।
टूटि गेल पिंजर पट्ट पंछी भड़लक उड़ान ।
अपना पाँखिक कमाइ गाछ चढ़लि खाई छी ।
अजुकी ....

प्रिय वा प्रियतर कहाऊ, प्रियतम तऽ पाइ भेल ।
सर्वोपरि टका तकर, दिव्यज्ञान आइ भेल ।
तेँ ने हम एक सिरये , अपने अघाइ छी ।
अजुकी ....

बेबी भऽ हेतै तऽ अपने कें लऽ आनव ।
ताहि कालक हेल्पिंग कें बड़का टा गुण मानव ।
पातिव्रत्य रहल कऽ रवा कऽ नहाइ छी ।
अजुकी ....

श्री राम केवट संवाद

हम सभ कते काल सँ नदी कात छी ठाढ़ औ,
पहुँचाबू ओहि पर औ ना ।

संगमे नव - नौतून परिवार,
कलकल गंगा जीक धार,
केवट पकडू - पकडू अपने सँ पतवार औ,
पहुँचाबू ....

चिन्हलहुँ - चिन्हलहुँ औ सरकार,
थिकियै अवधक राजकुमार,
सुन्हलहुँ चरण कमल मकरंदक चमत्कार औ,
नहिं पहुँचायब पार औ ना ।

लागल फेर चरण मे धूरि,
छुविते नैयो जेतै ऊड़ि
पोसब कहू कोन कोन तखन अपन परिवार औ,
नहिं पहुँचायब पार औ ना ।

पहिने तरबा अपन धोआऊ,
तकरा बाद नाव पर जाऊ,
अपने जौं चाहै छी उतरऽ दिन - देखार औ,
पहुँचाबू ओहि पर औ ना ।

सुनिते प्रेमक अटपट बात,
प्रभुकेर सिहरऽ लागल गात,
पसरल मुँह पर मुस्की मन मे भरल दुलार औ,
पहुँचाबू ओहि पर औ ना ।

हुलसल मन उमड़ल आनंद,
धोलक पद कमलक मकरंद
अमृत - ओदक पिविते भेल सकुल उद्धर औ,
रघुवर भेलेनि पार औ ना ।

विरक्ति

क्षण भंगुर संसार सजनि गय एहि ठाँ दुःखक पहाड़ भरल अछि,
नोरक निरझर धार सजनि गय उमड़ल बनल दहाड़ चलल अछि ।

बचा सकब कहू कोना आन कें,
हम तँ अपने डूबि रहल छी ।
हँसा सकब कहू कोना आन कें,
सिंगड़हार भऽ चूबि रहल छी ।
इस्सक हाहाकार सजनि गय हिस्सक सागर खार बनल अछि।
नोरक..............................

मृगी जकाँ हम काँपि रहल छी,
झाँखुरसँ तन झाँपि रहल छी ।
देखि - देखि संधान सायकक,
आयुक छाँटी मापि रहल छी ।
करब कोना पथ पार सजनि गय ठाम - ठाम सौतार भरल अछि,
नोरक ....

विरहक शून्य सुदूर देश मे,
दिवसक कठिन करेज जड़ल अछि ।
रजनी अछि जोगिनीक वेश मे,
आंचर तर लुत्ती पसरल अछि ।
चिर - वियोग केर भार सजनि गय लऽ कऽ कहार चलल अछि,
नोरक ....

विशेष:- *स्व. कवि ऐ कविताक रचना सन् 1990 ई. मे अप्पन अर्धांगिनीक मृत्युक वियोग मे कयलनि ।*

कमौतिन भौजी

भौजी नव सलवार सियौलनि - भैया पुरने साँची मे ।
मियाँ रहला गामे बीबी सर्विस पौलनि राँची मे ।

भोरे आंगन कुचरल कौआ,
भैया पड़ल माथ तर पौआ,
सपने मे भौजी के पौलनि,
प्रेमे पासी पॉज लगौलनि,
प्यासल - प्यासल आँखि सटल सूखल खरकट्टल कॉची मे ।
मियाँ रहला गामे बीबी सर्विस पौलनि राँची मे ।

करथि आंगनक चैकीदारी,
काज भानसक लागनि भारी,
दहिना अंग जखन कऽ फड़कनि,
अभिलाषा मे छाती धड़कनि,
मनक व्यथा कें कखनहुँ - कखनहुँ गावथि गीतक पॉती मे ।
मियाँ रहला गामे बीबी सर्विस पौलनि राँची मे ।

रोटी नहिऍ बेलऽ आयल,
बना लैत छी दलिपिट्ठी,
एहि जीवन सँ मरने पक्का
ई हम्मर अंतिम चिट्ठी,
मिलनक लेल प्राण अछि अटकल लटकल विरहक फॉसी मे ।
मियाँ रहला गामे बीबी सर्विस पौलनि राँची मे ।

भौजी सॉझे आबि गेली हे,
दूहल देह गुहल छनि जुट्टी,
भैयाक सौभाग्य सुशीतल,
बनि जायत ई गरमी छुट्टी,
रूसल पति कें कनियाँ बौंसथि गम - गम लौंग अरॉची मे ।
मियाँ रहला गामे बीबी सर्विस पौलनि राँची मे ।

कन्यादान

आब बनवह विरान हय बेटी,
चूबि जयतह ई नोर,
डूबि जयतह ई ठोर,
त्यागि थीर मुसकान हय बेटी ।

बेटे जकाँ तों जनमलह आ बढ़लह,
बेटो सँ बढ़िकऽ माईक मन भरलह,
काका आ काकी लगक दुलरैतिन तों,
अपना स्वभावे सभक मन हरलह,
बाबाक ध्यान तों बाबीक जान तों,
बापक परान हय बेटी ।

तोरा जनमिते परायल अन्हरिया,
पॉजे समटलहुँ हम पसरल इजोरिया,
घऽरक कुमुदिनियाँ हम परक चननियाँ तों
ई कहऽ आयल कहौतियाक भरिया,
आई धरिक पूनम तों काल्हिए सँ बनि जयवह,
दुतियाक चान हय बेटी ।

लैह अशीरवाद करह अचले श्रृंगार तों,
बनल रहह हुनक मुँधमनक शुद्ध हार तों
आशुतोष, मृत्युंजय शंकरे जमाइ हमर,
जानि गेलहुँ पुत्री नहिं गौरी अवतार तों,
हम कऽ देलहुँ दान,
आइ भऽ रहलै ज्ञान,
अहाँ बनि गेलहुँ हय बेटी ।

रौद्र गायिके

स्वरावद्ध रव रौद्र गायिके
छूम छनन छम-ताल निरत पद-
नर्त्तित गति गति, बह्ममाण्ड नायिके।
स्वरा वद्ध रव रौद्र गायिके।

अखिल भुवन धहधह मसान बनि,
आबि बसल गगनक गंगातट
सहज सुवासित-चिता-ज्योतिसँ
मोहक-मादक-रोचक मरूघट

कालगालगत वकल भूतकेँ
वर्त्तमान-विश्राम दायिके।
स्वरावद्ध रव रौद्र गायिके?

भस्मीभूत क्षेत्र सौन्दर्यक,
पदतल परसि बनल नंदनवन
सुरदुर्लभ भविष्य करतलगत
जागल नरकंकाल मुँदितमन

सुधाकलशपर चपल चरण दुहु
द्रवु द्रवु मां, हय, महाकालिके!
स्वरा वद्ध रव रौद्र गायिके?

दिगम्वरी, केशाच्छादित कटि
रंजित नयन, विकट तन कारी
चकमक खंग, धहाधह खप्पड़
मुँण्डक माल भयावह भारी
होउ, होउ समधान महेश्वरि
सहज वत्सले, प्रणत पालिके।
स्वरावद्ध ख रौद्र गायिके।

मातृवंदना

जननि हय, जीवन हमर कठोर ।
अध्यावधि सुख - शांति न भेटल,
पयलहुँ विपति अघोर ।
जननि हय जीवन हमर कठोर ।

जानी नहि वात्सल्य - पाश,
अज्ञात सिनेहक कोर ।
लागल नहि ऑचर क छाँह,
नहि सटल गाल पर ठोर ।
जननि हय जीवन हमर कठोर ।

आनन पर अविराम रूदन,
मन पर चिंता घनघोर ।
कतऽ हमर विश्राम - राति हे,
कतऽ विनोदी भोर ?
जननि हय जीवन हमर कठोर ।

अपने शिव शव वनल शिवे,
तोरो छह लगल बकोर ।
तोहर दया अकाशी चंदा,
हम धरती क चकोर ।
जननि हय जीवन हमर कठोर ।

माँथ पर धान

की लचकल अछरल पछरल डॉड़,
की मचकल आँचर गछरल फॉड़,
चालि उत्तान छै,
माँथ पर धान छै ।

बढ़ै छै रूनरून रूनरून शीस,
पड़ै छै दीठि पायलक दीस,
कंठ मे गान छै ।
माँथ पर धान छै ।

की चमकल बुट्टी - बुट्टी देह,
ठोर पर हासक पातर रेह,
गाल तर पान छै ।
माँथ पर धान छै ।

आँखि पर लागल लाजक बोझ,
घोघ सँ ताकय सोझे सोझ,
लक्ष्य खरिहान छै ।
माँथ पर धान छै ।

भक्त रहलै मंदिर कें झोलि,
गेलै दू - दू शिव आसन डोलि,
अभय वरदान छै,
माँथ पर धान छै ।

वियोगक वीतल कारी रैन,
जुड़ायल आइ मुँड़ायल नैन,
गगन मे चान छै,
माँथ पर धान छै ।

काटि कऽ माल भोग केर खेत,
बान्हि कऽ बोझ चललि समवेत,
गमागम प्राण छै ।
माँथ पर धान छै ।

वदन पर अनुचित अलुपित दृष्टि,
चरण पर करू सिनेहक दृष्टि
एतय भगवान छै ।
माँथ पर धान छै ।

हे चरऽरक चंडी धऽरक देवि,
देश बढ़ि रहल अहाँ कें सेवि,
मोँछ पर शान छै ।
माँथ पर धान छै ।

बुढ़ारी मे घीढ़ारी

बुढ़ारी मे ई घी की -
एकरा कहियौ डालडा ढ़ारी ।
वरद जुआ कऽ हाँफि रहल छथि -
चमेर लेट्ट गाड़ी ।

बुनलनि गहुमक लेट भेराइटी,
दऽ सकलाह खाद नहि डाइटी,
दाना बेगाना भेलनि,
थ्रेसर पर चौकल नारी ।

मझिनी मे जलपान करै छथि,
भरलो थार जियान करै छथि,
उठि गेला चटनी चटैत,
पड़ले तरूआ तरकारी ।

हे देखू अकरहर करै छथि,
पेंचर ट्यूब मे हवा भरै छथि,
जोलही धोती केर आसन पर,
पसरल सीफेन साड़ी ।

बऽर सऽख सँ दाँत लगौलनि,
खसि पड़लनि जहिना मुँह बौलनि,
कनियाँ ओङठलि दरवज्जा पर,
अपने बैसल बारी ।

टीशन पर रोमांस करै छथि,
हीरो सबहक कान कटै छथि,
कारी केश खिजाबी ताहि पर -
उगलनि उज्जर दाढ़ी ।

सारिक पत्र पाहुनक नाम

फोटो अहँक टङबौने छी मन मे,
हऽम छोट सारि अहँक औ पाहुन,
हमरे शपथ अहाँ अबियौ फागुन मे ।

जहिया सँ गेलहुँ हमर नीन लेलहुँ,
ओझा अहाँ पर सुनू मरि गेलहुँ,
हमरा तऽ कंठी अछि अपने मँछखौका औ,
झोरे चटयलहुँ कियक नेनपन मे ।
फोटो ....

साँझे दैया लग परिते निनयलहुँ,
सपने मे झटकल अहाँ चलि अयलहुँ,
ओझा बुझि धयलहुँ जहिना हम बहिना कें,
ओ हँसलि हम दुःगंजन मे ।
फोटो ....

चाही ने हमरा सिनुरो आ चूड़ी,
इच्छा अछि एक्के बहुत मजबूरी,
एखन अहाँ नेह क्षीर ढारू बहिना कें,
हमर मिलन होयत अगिले जनम मे
फोटो ....

राम बिना अवधपुरी

विलपि रहल वन उपवन भवन निःपरान गय,
राम बिना अवधपुरी लागय मसान गय ।

पतनी चुड़ैल भेलि पति परेत सन सूझै,
बेटा वैताल माय जोगिनी वनलि बूझै
कोयलि कुलवधू आइ डाकिनी समान गय,
राम बिना ....

शैल युता काली आ शंकर भैरव बनला,
तांडव नर्तकक लेल, सोझे सरयू फनला,
डमडम डमरू त्रिशूल चमकय असमान गय ।
राम बिना ....

धऽर धऽर मे विलाप द्वारि - द्वारि हहाकार,
बूढ़क की बात हाय नेनो तजलक अहार,
अप्पन ने ककरो क्यो सभक सऽभ आन गय ।
राम बिना ....

शीतल अछि आगि पानि अदहन भऽ उधिएलै,
कॉट भेल कोमल आ फूले गड़ि - गड़ि गेलै,
झडकावै चानिनियाँ जड़ि रहलै चान गय ।
राम बिना ....

डहकन

मोँछ लागल औ करकर मोँछ लागल औ,
बुडहा समधिक नाकक नीचाॅ कर - कर मोँछ लागल औ ।

खोंच लागल औ खरखर खोँच लागल औ,
भृत्या समधिनक गालक ऊपर बरबर खोँच लागल औ,

सऽमधि बनला वन विलार चढला बोहुक चिनुआर
ताबरतोड़ करौछक मारि देखि कऽ सोच लागल औ,
खोंच लागल................

समधिन पड़ले पड़लि ऊतान, झाड़थि अपन पुरनकी शान,
सऽमधि गोरथारी दिसि ठाढ़ कपै छथि कोच लागल औ
खोंच लागल................

समधिन ऊपर सऽमधि तऽर हुड़ियाठल गतर गतऽर
नूआ केर मुंडी सँ डोराडोरि मे, घोँच लागल औ,
खोंच लागल................

राघव सरकार

सुनिऔ औ राघव सरकार केहेन कऽ देलिऐ उपकार
गमकल चरण कमल रज सँ हम्मर सऽड़ल जिनगी ।

दुलकल दुलकल राजभवन सँ आयलऊँ आश्रम हुलसल मन सँ,
अकारण देखि ऐहेन उपकार चकित भऽ रहल सकल संसार
गमकल..................................

लुटा गेल सर्वस्व हमर छल के सुधि लितय मजाल ककर छल,
अपने दया सिन्धु अवतार कयलहुँ बरका चमत्कार ।
गमकल..................................

मानव की कीट पतंग चरि हमरा त्यागि पड़ायल हे हरि,
हरलहुँ भारी पापक भार कयलहुँ डूबल नैया पार ।
गमकल..................................

चरण बढ़ाउ कृपालु खड़ाडी नेह नोर सँ लाउ पखारी,
पोछि आँचर सँ बांटवार करब हम तरवे कें श्रृंगार ।
गमकल..................................

राधिकाक विलाप

चलि गेला सखि श्याम जमुँना पार गय,
हमर जीवन नाव तजि मजधार गय ।
पीठ पर फहरा रहल छल पीत पट,
कॉख तर बॅसुरी अधर पर एक लट,
कर कम लमे काठ केर पतवार गय ।.........

भऽ गेला वैराग्य लऽ घर सँ विदा,
ज्ञान मे वनि नाथ गुरू जगतक मुँदा,
प्रेम मे की ई उचित व्यवहार गय ।......................

सत्य अछि घनश्याम चोर हियतोड़ छथि,
रूप कपटी निरदयी बेजोर छथि,
झूठ योगेश्वर कहनि संसार गय ।............

आन खातिर कान्ह पूर्णानंद छथि,
मिलन सुमनक शुद्ध मधु मकरंद छथि,
व्रजक बनला विरह हाहाकार गय ।............................

हुनक सांख्यक गीत सँ गीता बनल,
भक्ति केर उपदेश सँ गुंजित गजल,
राधिकाक विलाप सभ वेकार गय ।.......................................

हमर गाम

हमर गाम अछि बड़ महान औ, शकरकंद लागल गारा ।
परतर के कऽ सकतै आन औ, शकरकंद लागल गारा ।

हलधर जूआन विशुनदेव पहलमान जतऽ,
बुलबुल, बुच, बैजू बनऽल विद्वान जतऽ,
ब्रह्मदेव सऽन विद्वान औ शकरकंद लागल गारा ।
परतर ....

दऽस लोक बीच बनै धर्मावतारे,
देखू से कऽ रहलै भवसागर पारे
सुनहट मे लऽ रहलै प्राण औ शकरकंद लागल गारा ।
परतर ....

मूरूख भऽ वी0 ए. केर काने कटै छै,
भोरे सँ साँझो धरि ज्ञाने छँटै छै,
निशवद मे चरबै - छै धान औ शकरकंद लागल गारा ।
परतर ....

सगरो दिन रहलै फलहारे मे बैसल,
साँझे देखै छी ओ गहवर मे पैसल,
कक्कर कऽ रहलै धेयान औ शकरकंद लागल गारा ।
परतर ....

जक्कर मधूर चाखि मस्त गामवासी,
खाकऽ धधूर सैह बनलै उदासी,
कचरी केर केलकै दोकान औ शकरकंद लागल गारा ।
परतर ....

भेल चौपाड़ि पऽर पूरा कठघारा,
नौला सँ भऽ रहलै वीस अवधारा,
राखू सिङराही केर मान औ शकरकंद लागल गारा ।
परतर ....

नवदुर्गा

सिंह पीठ असवारि लगै छी अहाँ बऽर वढ़ियाँ ।
अति सुन्नरि सुकुमारि लगै छी अहाँ वऽर बढ़िया ।

हस्त त्रिशूल चक्र अति चकमक,
रक्त पिपासित खप्पड़ भक् भक्,
अखिल लोक अवाक् सभ ठकमक,
चललहुँ बनलि विहाड़ि लगै छी अहाँ बऽर बढ़ियाँ ।

गत्र गत्र पर रक्तक छिटका,
असुरक पीजु चरण तर टटका,
क्रुद्ध नयन कर साँपक सटका,
ठाढ़ि महिष कें मारि लगै छी अहाँ वऽर वढ़ियाँ ।

भऽरल सभटा राक्षस सेना,
तीतल आँचर बहल पसेना,
आऊ हौकि दी वाँसक बेना,
बैसू मुँस्की मारि लगै छी अहाँ वऽर वढ़ियाँ ।

हे दुर्गे जगदम्ब व्यथा हरू,
अपना कोर माय हमरा करू,
रामक भक्ति सुधा मुँख मे भरू,
हे पयस्विनी नारि लगै छी अहाँ वऽर बढ़ियाँ ।

रामावतार

डेग झटझारि चलू टेल्ह पट पारि चलू ।
राम अवतार भेल नरेशक द्वारि चलू ।

दिवसो दू पहरक मासो अति मधुरी,
सिहकल मलय पवन, गमकल अवधपुरी,
त्यागि कऽ आड़ि चलू, खेत पथारि चलू ।
राम अवतार भेल...................

संग मे शेष लखन भरतक शुभदर्शन,
शंखे अरिमर्दन रामे मधुसूदन,
नवो नरनारि चलू घोघ ऊघारि चलू ।
राम अवतार भेल.................

बॉटु सभ विसु वन्हन लुटाउ आभूषण,
परगट पुरूषोत्तम धैन छी अॅऽहू हम,
घट सम्हारि चलू चहुमुँख वारि चलू ।
राम अवतार भेल ....

शरणे आउ सखी उठाउ पदरजकण,
लगाउ प्रेमांजन जुड़ाउ नैन अपन,
जिनगी तारि चलू अहिल्या नारि चलू,
राम अवतार भेल ....

भैयाक विआह

जहिना धरफर्री वियाह,
तहिना कनपट्टी सिनूर,
ओहिना कऽ लिऔ भैया अनिल रूकसद्दियो जरूर ।
वल्व जड़ै छल भीतर वाहर,
केहेन अनूप अहाॅ केर ठाहर,
लालपुरक तोड़ण लागल छल,
सोनापूरक कलश साजल छल,
माथा पर मुँसहरी गर मे माला मोतीपूर ।

अतुकांत मंत्र सँ पं0 विद्याधर,
करौलनि परिणय वाॅचि धराधर,
सार श्याम आ नवल नन्द सन,
चन्द्र विकल स्वागत धुनि तनमन,
भीम पघारी सँ दतमनि लेल काटल ठाॅढ़ि वबूर ।

गदगद देखि अंजु सन सारि,
परिछन कालक विसरि लहुँ गारि,
समना आ भिरहा केर संगम
दू-दू सासु सँ सासुर गमगम,
उषा सन सुकन्याक हाथ मे वियनि पंख मयूर ।

चललहुँ जहिना अहाॅ सहरसा,
वरसावैत वसन्ती वरसा,
भुक्खे गाड़ी मे अधीर औ
मोन पड़ल कोवरक खीर औ,
एकसरि किएक गेलहुँ रंगशाला टूटल भौजीक गुरूर ।

नारि सुनू

हे नारि सुनू सुकुमारि सुनू
कहि रहलहुँ हम किछुआन वात,
तकरो अहाँ कानि पसारि सुनू ।

सतयुग मे हम नेना भुटका,
त्रेता मे ब्रह्मक आचारी,
द्वापर मे ज्ञानक अहंकार,
कलि मे छल भक्तिक लाचारी,
सभ झूठ मूठ केर दंभ देवि, जौं अहीं अनचिन्हारि सुनू ।

श्याम रैनि वाट नहि सूझय,
सृजन देवि! अहँक आँचर अन्हार,
धरा अनलहुँ अवोध राघव कें,
तखन कोना पसरल व्याभिचार ?
रौद्र नायिके भुवन वचाबू अयलहुँ अहँक दुआरि सुनू ।

गीत

वंशीवट वेकार गय,
यमुँना तट अन्हार गय ।

एक श्याम विनु सगरो,
वृन्दावन भरि हाहाकार गय ।

सून - सान घर द्वार गय,
यौवन भेल असार गय ।

मन मोहन मुँरलीक संग,
चलि गेल नदी केर पार गय ।

उपटल खेत पथार गय,
मिलनक वन्न वजार गय ।

आव राधिका सँ के करतनि ,
हँसि हँसि मधुर दुलार गय ।

सखि पैसलि जलधार गय,
होइतथि कोना वहार गय ।

सभक चीर चुनरी पजिऔने,
श्याम ठाढ़ि पर ठार गय ।

देसिल वयना क अस्तित्व

भुवनक सभ सँ मिठगर वयना,
वेन जकॉ अहॉ वॉटि देलहुँ ।
औ भलमानुष मिथिला नंदन,
मातृक देहक कुरी लगयलहुँ ।
केओ दछिनाहा केओ तिरहुतिया,
केओ वज्जि - सरैसा केओ कोशिकन्हा ।
एक्के नादि मे सभ मधुर चखै छी,
तखन विलग अछि छान ओ पग्घा ।
कत' छी हम सभ कत' हमर मिथिला,
कत' विदेह नोर खसवै छथि?
कत' वैरागी वनि विद्यापति वैसल छथि,
कत' सिया वेटी कुहरै छथि ?
अहॉ छी भलमानुष त' रहू,
हम अधम मुदा छी मैथिली भाषी ।
अहॉ पढ़ू अंगरेजी, फ्रेंच, जपानी,
आन वयना वाजू घुमैत काशी ।
नहि अछि हमरा द्वेष अहॉ सँ,
छोड़ू नहि अपन उत्थानक अवसरि ।
मुदा! द्रविड़, वंग गुजराती कें देखू,
हुनक वयना गेलनि आर्यावर्त मे पसरि ।
ओ नहि अपन भाखा कें छोड़लनि,
स्वभूमि हो वा हो प्रवास ।
नेना भुटका संग देसिल वयना वाजू,
जगाउ अगिला पिरही मे विश्वास ।
चन्दा सुमन यात्री मधुपक,
जुनि करू भावना पर अघात ।
दिवस निकट ओ आवि रहल अछि,
हेती मैथिली सभ सँ कात ।

जौं अपन वयना सँ सिनेह नहि राखव,
’माँ‘ भ’ जेती अस्तित्व विहीन ।
ततक अस्तित्वक गप्प नहि पुछू,
जननी बिनु ओ स्वतः विलीन ।

मातृगीत 1

सेवा करियौ ने मुंजूर, अयलहुँ बुलिते बहुतो दूर ।
ऑजुर भरल अढ़ूलक फूल एड़ी गरल बबूरक शूल ।

हमहूँ पूत अहींक एक माँ अपने त ँ जगतक अम्बा छी,
उघऽ पड़त भार हमरो माँ अपने सवहक अवलंबा छी,
हे पाथरक मूरूत मोम भ' पिघल' पड़त जरूर ।
सेवा.........................

भुवनेश्वरि मणिद्विपक रानी, वेटा भुखल माँटि लोटैए,
माँ अपने लग सुधा सरोवर प्यासल पूत नोर घोंटैए,
अहँक हाथ नवरचना हम्मर जीवन चकनाचूर ।
सेवा.........................

ब्रहमरमणि थाकलि ठेहियायलि पकड़व जखन अपन जप आसन,
ठाढ़ रहव श्रद्धा सुरसरि ल' राखव भगति भोग केर वासन,
चमकाबू चानक टिकूली माँ उषा किरण सिनूर
सेवा.........................

मातृगीत - 2

सिन्धु शैल - भूमि सुते सीते,
पुत्र हम मलीन माँ पुनीते ।
ऑचर सँ झाड़ि दिय ।
कर सँ पुचुकारि दिय,
अधर पर उतारि अमर प्रीते ।
पूत हम मलीन माँ पुनीते ।
सुःखक थपथपी दैत,
शांतिक निनियॉ गवैत,
सुना दिय अपन मधुर गीते ।

पूत हम मलीन माँ पुनीते ।
पसरल विपत्ति घटा,
छिटकाबू त्राण छटा,
कहिया धरि रहवै भयभीते ।
पूत हम मलीन माँ पुनीते ।

काटरक महिमा

महिमा ई काटर प्रथाक वड़ भारी ।
बाबा दलाल बाप वरदक व्यापारी,
बेटा बछौड़ बीकि गेलै हजारी ।
शील सौन्दर्यक नहि कोनो सुमारी,
हंसक घर एलै वगुलवा कुमारी ।
मरूआक रोटी पर तरूआ तरकारी,
रेशमक सिक्का पर कनफुट्टा टारी ।
वलकुचही गोरा पर भरल वखारी,
हुवघड्ढू ड्राइवर लग मरसल्ली गाड़ी ।
ऑटी भरि धोती तर वोझ वनल साड़ी,
दुव्वर कुमार मुँदा दोवरि कुमारी ।
उल्लू लग मयना हरिण लग पारी,
बनराक हाथ पर पद्मिनिया नारी ।
लकलक चतरिया तर चतरल खेसारी,
वाउ सुलहनामा त' दाइ फौजदारी ।
आंगनक वाटे नहि कट्ठा भरि वारी,
ऊँचे जोतॉस मुँदा लेया घरारी ।
वऽर प्राइवेटे छथि कनियाँ सरकारी,
वाऊ ब्रहमपुत्र दाई वंगोप खाड़ी ।
एक लोकमाया त' एक ब्रहमचारी,
भौजी छतौनी त' भैया खरारी ।

जागू माँ आद्या

सूतलि वतहिया मैया लागल केवाड़ अय ।
जागू - जागू माँ आद्या करियौ उद्धार अय ।

मधुकैटभ महिषासुर घातिनि,
धूम्रनयन चण्डादि निपातिनि,
बीजक शोणित सुरा पायिनी,
शुम्भ मारि कऽ शांति दायिनी
पसरल फेरो अघलहिया असुरी अन्हार अय ।
जागू - जागू माँ आद्या करियौ उद्धार अय ।

सौम्ये नंदिनी अति भयंकरे,
रक्त दंतिके माँ अयोनिजे,
ताकू माँ अपन संतति कें,
शाकम्भरि हरि लिअ दुर्गति कें,
अहीं सँ भेलै ताहिया दुर्गम संहार अय ।
जागू - जागू माँ आद्या करियौ उद्धार अय ।

भीमे क्षुधिते असुर भक्षिके,
अरूण नाशिनी साधु रक्षिके,
अत्याचार कही जँ हेतै,
रक्षाभार अहीं पर एतै,
लऽ तिरसूल सुदर्शन पहिया लियौ अवतार अय।
जागू - जागू माँ आद्या करियौ उद्धार अय ।

महिमा अहँक महान भवानी,
करू कतेक गुणगान भाविनी
भोग मोक्ष दुहू पवै अभव्या,
जे अहँक धुरखुरू भाव्या,
हमहूँ संतति नहि वहिया हमरो अधिकार अय ।
जागू - जागू माँ आद्या करियौ उद्धार अय ।

चैती दुर्गा

आगाॅ - आगाॅ वऽर पाछाॅ सँ देयऽर ।
चलली सीता चैती दुर्गा देख दशानन नगर ।

संग साधना दाइ ज्ञान विरागी भाई ।
जा रहली भगतिनिया वेटी बापे कोर पर ।

मुँसुकी अधर झाॅपल घोघे तर ।
जगदम्बाक भाग जागलनि कतेक दिन पर ।

मोने मोन तरंग नैना रंगे रंग ।
बोने बोन बढ़लि जा रहली ठीक दुपहर ।

हम सुपनेखे दाइ करू ने सगाइ ।
हमरा सन केर सुन्नरि नारी अपने सन के नर ।

एखने सँ ई हाल मेला हैत कमाल ।
देखू नकसिनुरी भऽ रहलै विच्चे वाट पर ।

मुँरही बनला खऽर दूषण झिल्ली झऽर ।
त्रिसरा मूरक बरी चिबावथि चामुँण्डा कर कऽर ।

बनला वालि मिठाइ जोगिनी लऽ लऽ खाइ ।
अच्छ कुमारक देहक कचरी कचरि रहल गीदऽर ।

नटुआ छथि हनुमान देखू नाच महान ।
उक फेरी केर कला प्रदर्शन भऽ रहलै घर घऽर ।

कहू की - की लेव जे कहवै से देव ।
गिरिमल हार लालक टीका शुद्ध सोनक छर ।

एहेन लोभ ने फेर कऽ दीए अन्हेर ।
सेन मोन पड़िते सीता कें होवऽ लगलनि डर ।

मेघनादक गऽर चाही कुंभक धऽर ।
हम बनैत छी काली अपने वनियौ हे हरि हऽर ।

रावण भेला निडर बान्है छी ऑंचर ।
दसमुँण्डी माला पहिराबू झोंटक ऊपर ।

होउ जननि समाधान बजलनि झुकि हनुमान ।
ई अपमान निशाचर कुल पर वर सतवनि जहर ।

उदासी

चानक मुँख देखु मलान भेल,
भऽ गेल आव रक्तभ क्षितिज,
दुरदिन मानक अनुमान भेल ।

मुस्की मे हाड़क संदर्शन,
आनन पर रूपक भ्रम विशेष,
कहवैत रहल जे गालक तिल,
से साँपक विल वनि रहल शेष,
आँखिक तीरक विख पानि नोर वनि,
झहड़ल हृदय झमान भेल ....

बुझलहुँ जकरा हम सुधा कोष,
ओ पानिक फूटल घैल बनल,
कुहरैत अजर कें जड़ल देखि,
सभ ज्योति स्वयम् मटमैल वनल,
रवसि रहल मनोरथ स्फुतनिक,
लूना अनेर हैरान भेल..............................

ककरा पर रूपसि करी आश,
ई कल्पो विटप बबूर भेल,
रोपल अमिसिंचित वर प्रवाल,
बढ़ि जेठक ठुट्ठ खजूर भेल,
जकरा छाया मे छलहुँ आइ ओ -
पुरना चार पलान भेल.............................

परिचय पात

जुनि पुछू परिचय पात सरवे,
वरू रहल संग किछु रातुक विच,
उठि चलव कि हएत परात सरवे ।

दू क्षणक लेल वट-विटप वास,
जुनि लगबू पथ संपर्क सेज
ओम्हर देखी हासे विलास
एम्हर कॉपय रहि रहि करेज
कानय विषाद लग परवशता
आजुक ई अमानत गात सरवे ।

हम जएव अपना पतिक गाम,
अछि पएर पड़ल कर्तव्य वंध
ऑखिक आगॉ झलफल अन्हार
पुनि बधिर वनल दुहू कर्ण रन्घ्र
धुरि जाउ अहॉ अनचिन्ह जकॉ,
अछि सजग कहरिया सात सखे ।

ओम्हर लागल मोनक पियास
एम्हर उमड़ल अछि नयन नोर,
अपनेक तालु ग्रीष्मक अकाश,
पावसक धरातल हमर ठोर
अछि अहँक दृष्टि मे दाह मुदा ई
लोचन द्वय स्नात सखे ।

वासना पिशाचक युगल वाहु,
वढ़ि चलल वनाब' प्रवल पाश
जएतनि शुचिताक कंठ दवा,

भ' जएत प्रेमक सर्वनाश
वहि गेली देवसरि विचोवीच
हम दुनू छी दू कात सखे ।

वेदना

बैसलि छी सिनेहक पथार लऽ कऽ
पिया चलि गेलहुँ कतऽ पहाड़ दऽ कऽ
दरिसनक आश बनल कलुष सपना
पूजाक दीप भेल नोरक नपना
अहाँ आबू सजल चन्द्रहार लऽ कऽ
पिया...

उदरि महक चुलि बुलि तात बिनु शान्त
निशबद भुवनमे छोड़ि कतऽ गेलहुँ कान्त?
सेहन्तित छी लोढ़ि सिङगरहार लऽ कऽ
पिया...

सासुक मधुर गप्प झड़काबै गात
कएलक अकच्छ तरुण पुरबा बसात
स्वाती अएलनि रसवन्ती धार लऽ कऽ
पिया...

सिहकल सरस पूस देह ठिठुरल
परिमल सिनेहक आश माघो बीतल
आबि गेल फागुन फुहार लऽ कऽ
पिया...

करूण गीत

सुनि - सुनि कोकिलक करूण गीत,
कुसुमित कानन कें देखि रहल अछि,
आइ श्रवित लोचन समीत ।

अछि आवि गेल श्रृंगार सेज पर
ज्वलित मसानक रौद्र रूप
वर दंत दलक हासक विलास मे -
वनल विभत्सक अंधकूप
भ' गेल सुवर्णक शौर्य शिखर पर -
शांति सागरक सुलभ जीत ।

हमरा भावक सुकुमार पाश मे
आयल प्रेमक रम्य फूल
कयलहुँ जहिना किछु आलिंगन
चुभि गेल अनेको वक्रशुल
उड़ि गेल गगन दुर्लभ सुगंध
झड़ि गेल धरा मकरंद पीत ।

सौन्दर्यक भूमि मरूभूमि भेल,
रमणीय देवसरि सुखा गेलि
आयलि सुषमा दू छनक लेल
हमरो जीवन कें दुखा गेलि
संचित दुःखक रंजित सभटा,
प्रेमकमधु देखू भेल तीत ।

कटि रहल किए ई कला इन्दु
घटि रहल किए जीवन प्रकाश,
रजनीक रूदन विगालित प्रभात

कऽ रहल किए अतिशय उदाश
भऽ रहल ज्ञान जन्मक मकान
नहि रहत मसानक सात वीत ।

.

हे तात

ई कातर प्राण, चतुरथीचान -
धरक धरि ध्यान रहय अनुखन ।
ई बेलक गात सजय नवपात
पड़य हे तात, अहींक चरण ।

मनक सभबात बनय जलजात
कि भऽ बरू जाउ एकातक आक
फड़य सभ मौन मनोरथ फूल
रहय अथबा बनिकऽ मरू खाक ।

करी सभदान, लिअ भगवान
उपस्थित दीन धथूर क मन ।
ई कातर प्राण, चतुरथीचान -
धरक धरि ध्यान रहय अनुखन ।

हे त्रिपुरारि, अहॉक दुआरि,
सुनी दिन राति भिखारि भिखारि
सुनू अबधूत ई दास अभूत
ने माङत आब कही पर चारि ।

हरू सभ दोष, भरू संतोष
करू उद्घोष - "ई हम्मर जन" ।
ई कातर प्राण, चतुरथीचान -
धरक धरि ध्यान रहय अनुखन ।

झूला

झुलबथि कान्ह, झुलै छथि राधा ।
डूबि डूबि श्यामल नीरद मे -
चान उगै छथि आधा ।
झुलबथि कान्ह, झुलै छथि राधा ।

कालिन्दी कूलक कदंब सँ -
रेशम डोरी लाधा ।
झूलि रहल मणि खचित मनोहर
झूला एक अबाधा ।
झुलबथि कान्ह, झुलै छथि राधा ।

कंकण ताल खनन खन बँसुरी -
बर कमाल, स्वर साधा
खसली श्याम क कोर उछलिकऽ
सम्हरथि सम्हरथि जा जा ।
झुलबथि कान्ह, झुलै छथि राधा ।

देखि देखि नाँचल ''बुचबा''
ताथैया - धिक् - धिक् - धा धा ।
विरह विकल मन विहग लेल ई -
याद भेल अछि व्याधा ।
झुलबथि कान्ह, झुलै छथि राधा ।

दुर्गा वंदना

सर्वेश्वरि दुर्गे, सुवुद्ध दहक सभकँ तोँ
हरहक सबहक अज्ञान,
माइ हे, तोरेमे सभ भगवान।
पहिने तोँ मैँटि दहक, मोनक विभेद बुद्धि
भऽ जाएत तदुपरान्त सहजेमे आत्म-शुद्धि
कपट-दंभ-अहंकार-स्वार्थ-दैत्यकँ सँहारि-
करहक जगक उत्थान।
माइ हे, तोरेमे सभ भगवान।
शिवक तेज आनन, चतुराननसँ चरण भेल
विष्णु बाँहि, सोमस्तन, इन्द्र तेज डांड़ देल
यम-सुकेश, वरूण जाँघ, पृथ्वी नितम्ब भेलि
वसुगणार्क अंगुलि निर्माण।
माइ हे, तोरेमे सभ भगवान।
नासिका धनाधिपसँ, प्रजापतिक दंत स्वेत
अग्निसँ त्रिनेत्र, साँझ भौँह वक्रता समेत
वायुदेव कान देल-एहि तरहेँ प्रगट भेल-
नारि एक सूरूज समान।
माइ हे, तोरेमे सभ भगवान।
हरखित भऽ शंकर निज शूलसँ त्रिशूल देल
विष्णुक सुदर्शनसँ चक्र एक जनमि गेल
धर्मराज दंड, वरूण पाश, प्रजापति देलनि-
स्फटिकक माला महान।
माइ हे, तोरेमे सभ भगवान।
सलिलदेव शंख, काल ढाल-करवाल देल
ब्रह्मा कमंडलु, हुत्ताशनसँ शक्ति लेल
वायु धनुषवाण, सूर्यतेज, इन्द्र कऽ देलनि-
घंटा आ बज्रक प्रदान।
माइ हे, तोरेमे सभ भगवान।

क्षीरोदधिदिव्यवश्त्र, चूड़ामणि, श्वेतहार
कुंडल-केयूर आर नूपुर सङ सभ सिङार
विशकर्मा फरसा, अनेक अश्त्र शस्त्र एक-
कमल-माल देल अमलांन।
माइ हे, तोरे मे सभ भगवान।
नागराज मणि मंडित उरगहार दिव्य देल
धनपतिसँ पूर्ण मधुक मानपात्र प्राप्त भेल
हिमवानक देल सिंह वाहनपर शोभित तोँ-
तोरा सनि कत्तऽ के आन?
माइ हे, तोरेमे सभ भगवान।
कऽ रहली, व्योमवीच रहि रहि कऽ अट्टहास
गर्जनाक गुंजनसँ फाटि रहल छै, अकाश
डोलल पहाड़, काँपि उठलै, समुँद्र सकल-
उठि गेलैक भारी तूफान।
माइ हे, तोरे सभ भगवान।
डेगेमे धरती, आ पाँजेमे छह त्रिलोक
सिंहवाहिनी भवानि, हरहक संततिक शोक
जय हे मां दुर्गे तोँ सर्वलोक शक्तिपूंज,
करहक सबहक समाधान।
माइ हे, तोरेमे सभ भगवान।

श्री राम वंदना

अनुग्रह करू श्री सीता राम
हम प्यासल, भटकल मरूवासी
अहँ लटकल घनश्याम।
सहज कृपालु, सभक हितकारी,
श्रमितक पूर्ण विराम
प्रेम विभोर अधिक गद्गद् हम-
गुनि अहाँक गुणग्राम।
अनुग्रह करू श्री सीताराम।

अग्नि-परीक्षित कंचन सन तँ
अछिए चरित ललाम
संग-संग चानन सम गमगम-
कोमल चित निष्काम।
अनुग्रह करू श्री सीताराम
तपोमूर्ति सौन्दर्य-पिण्डपर-
पल भरि पद-विश्राम
मुँदा हृदयकँ भक्ति-भीलनी
कीनि लेलनि विनु दाम।
अनुग्रह करू श्री सीताराम

साकेतोसँ अधिक चमनगर,
दिव्य अयोध्याधाम
कर्मयोग लग राज भोगकँ
त्यागल ठामेठाम।
अनुग्रह करू श्री सीताराम

विगलित नयन, धैर्य धऽ मन,
वन चललहुँ त्यागि तमाम।
विकल विवश जन जनक अधरपर
राखि अपन प्रिय नाम।
अनुग्रह करू श्री सीताराम।

काली वंदना

करू कृपा, करूणामयी मां,
हे सुभद्रे, कालिके!
भू चतुर्दश जननि, वृद्धे,
हे धरित्री- वालिके?

त्रिपुर-सुन्दरि, चिरयुवति मां,
योगमाया जालिके? विह्वले, अनुतापिते हे,
हासमय मुँख मालिके!

जय दिगम्वरि, व्योम व्यापिनि,
खंग-खप्पड़ चालिके?
रूप-रम्ये, गौरि सौम्ये,
वत्सले, जनपालिके?

भाल रवि-शशि, पद पताले
हे अनंतक तालिके?
देवि, अहँकेर ओर नहि,
छी अहीं छोरक घालिके?
करू कृपा करूणामयी मां,
हे युभद्रे कालिके?

शिव शक्ति पूजन

उमा संग शंकर कें पुजबनि पागल प्रेम मगनमा,
गंगा जल भरि भार चढ़यबनि लेप देवेनि चंदनमा।
आक धतूर बेल पातक संग सजि-सजि सुभग सुमनमा,
दारूण दुर्दिन दीप जरा कऽ दुःखक धूप धुमनमा।
उमा संग ....

अक्षत छीटि दूभिसँ झपवनि सुन्नर गोर बदनमा,
नीलकंठ कें भोग लगयबनि अमरित कनमा-कनमा।
उमा संग ....

श्रद्धा सागरक बीच विश्वासक राखब मेरू मथनमा,
केशर कुमकुम कस्तूरी सँ गमका देबनि भवनमा ।
उमा संग ....

छम-छम नाचि नचारी सुनयबनि माँ गौरीक अंगनमा,
आशुतोष तैयो नहि ढ़रता तऽ खसि पड़ब चरणनमा ।
उमा संग ....

नचारी

दहिना कऽ अपन भाग्य वाम,
जा रहलहुँ बैद्यनाथ धाम।
त्यागि भाइ बन्धु घऽर गाम,
जा रहलहुँ बैद्यनाथ धाम ।

कामनाक कामरू कें गंगा मे बोरि - बोरि,
आयल छी अजगैबी नाथ शरण हाथ जोरि,
नाचि-नाचि गाबि ठाम-ठाम,
जा रहलहुँ बैद्यनाथ धाम।

दुःखक अथाह धार भैरव जी पार करू,
बरका टा पापी हम हमरो उद्धार करू,
लैत रहब जीवन भरि नाम
जा रहलहुँ बैद्यनाथ धाम ।

चुट्टी केर धारी सन धामो मे भीड़ देखि,
छाती मे धकधकी सभ कें अधीर देखि,
कोना की करबै हे राम ?
जा रहलहुँ बैद्यनाथ धाम ।
कखनो कऽ रौद भेल कखनो तितैत छी
तरवा तर काँट मुदा तैयो हँसैत छी
कर्म कठिन भाव निष्काम
जा रहलहुँ बैद्यनाथधाम

गै खुशबू

(बाल साहित्य)

बाबा मालबावू नाना छौ कमाल बाबू गै
पप्पा रोकड़िया लग नानी मारौ टाल बावू गै।
बाबा खातिर चाहक गिलास
लबलब लबनी नाना पास
नानी चुक्का ढारौ बान्हि-बान्हि रूमाल बाबू गै।
बावा लेलनि माँछे कीन,
नाना खेलनि मुँरगा तीन
नानी भनसा घरमे लगा रहल छौ ताल बावू गै।
बाबा वाँचथि वेद पुरान
नाना पढ़थि नेवाज कुरान
नानी मुँल्ला जीसँ पूछि रहल छौ हाल बावू गै।
नाना भोरे भगला बाहर
नानी साँझे पहुँचलि ठाहर
ई सभ कहए आएल विद्याधर आ लाल बावू गै।

वंदना

(बाल साहित्य)

अम्ब, अहाँक महिमाक मधुर वर गीत कोना हम वालक गाबी?
समुँचित शब्द ने आबि रहल अछि, सप्तक स्वरालाप नहि पाबी
तोरेमे स्तित्व बनल, तौँ रखलह जठरक उमड़ल सरमे
रहल एहब हम कमल बनल, निष्चय रसभरल सुशील घरमे।
जन्मए काल 'नाल' लागल छल-तकर प्रणाम जनौलनि बाबी।
अम्ब, अहाँक महिमाक मधुर गीत कोना हम वालक गाबी
टूटल गँट, पाँक छूटल, दल गमकि गेल महमह गहवरमे
सुनल देवि, तौँ सूँधि लेलह, संतुष्ट भेलहुँ, छल हास अधरमे
आइ अहाँक निरमाल बनल छी खसल, हमर चलि गल नवावी।
अम्ब, अहाँक महिमाक मधुर वर गीत कोना हम वालक गाबी?
दुर्दिन बनि बटबीज खसल, जनमल, बढ़ि गेल, विशाल बनल अछि
आलिंगन-अपवर्ग, अंकक स्वर्ग, मर्त्यपद छोड़ा चलल अछि
कहह कहह देवि, किए, एहि कुलकुठारसँ छह वेदावी?
अम्व, अहाँक महिमाक मधुर वर गीत कोना हम बालक गाबी?
नव-मासक अविराम भारकेँ, कएलह वहन मधुर मुँस्कीसँ
हमरा ठोरक तरल मैल लगलह प्रियतर चाहक चुश्कीसँ
फाड़ि दैह वरू आइ जननि, हम तोरे देहक पत्र जवावी?
अम्ब, अहाँक महिमाक मधुरवर गीत कोना हम बालक गाबी?

गय नानी

गय नानी गय नानी बड़ बदमास भेलैं गय नानी ।
नाना संगे लड़ाइ काल समाठ लेलैं गय नानी ।
तोरे धरि नाना केर बातो,
तो उनटौले पिड़ही सातो,
तोरा डरे करथि ई थरथर
त्यागि देलेनि सौंसे आंगन घर,
नङरौने तैयो हुनका खरिहान गेलैं गय नानी ।
गय नानी................

नाना खतिर छिपली कारी
तोरा छौ स्टीलक थारी
नाना पावथि नोन सोहारी
अपना लय तरूआ तरकारी
अधजनमू दही केर मूड़ी काटि खेलै गय नानी,
गय नानी..........

रहलनि आब कतऽ की हुनका,
लागि गेल छनि तोहर ठुनका
मुँह मे रखने टुटल दाँत छथि,
खून देखि कऽ अपस्यात छथि,
भनसा घर सँ नाचि - नाचि बथान गेलैं गय नानी ।
गय नानी..........

नेना गीत

(हीरा - बेटी)

हीरा बेटी हमर बड़ दुलरैतिन ।
देखि कनियो कसरि चट रूसि जयथिन ।
भोरे उठिते निनायल माँगथि बिस्कुट,
नहबऽ काल हेरथि नव बाबासूट,
बुच्ची हम्मर सरोवर केर छोटकी मीन ।
देखि ....

बाप गेलथिन बजार आनथिन केरा,
चाही नितः चौपाड़ि परक दू पेरा,
बिनु दूधक ई सहि जेती भरि दिन ।
देखि ....

चाह देबऽ मे माँ जौं करथि देरिये,
ई ताकथि बाबू कें कनडेरिये,
खाइते - खाइते आँगन सँ एक - दू - दिन ।
देखि ....

आइ भोरे सँ खेलनि बऽत मुँक्का,
मूँहे भेलेनि जेना फूटल चुक्का ,
छथि हेहरि ई फेरो करथि बिनबिन ।
देखि ....

मुन्ना कक्का सासुर चलला

कच्छी कऽसि-कऽसि तहिपर धोती रऽचि रऽचि कऽ ।
मुन्ना कक्का सासुर चलला, पूरा सजि-धजि कऽ ।

सबसँ पहिने पोखरि धँसला,
चढिते काठ उनटि कऽ खसला ।
मललनि माथ माँटि करिऔटी,
ऊपर अयला झारि लंगोटी ।

अधमोनी झामा सँ गत्तर-गत्तर मलि-मलि कऽ,
मुन्ना कक्का सासुर चलला, पूरा सजि-धजि कऽ ।

एते किएक बेकल हौ मुँन्ना,
तोरे एकटा सासुर की ?
जतरा करऽ दिन देखबा कऽ,
बाबा जी कहि देलनि ई ।

अधपहरा जखने हेतै, दू मिनट हेतै दस बजि कऽ,
मुन्ना कक्का सासुर चलला, पूरा सजि-धजि कऽ ।

ताबरतोर चलल जा रहला,
जेठक तेज विहाडि जकाँ ।
रैन कतहु ने, पडे बाट मे,
साँझ लगए मुँनहारि जकाँ ।

हुलसल डेग बढाबथि आगाॅ हुमचि - हुमचि कऽ,
मुँन्ना कक्का सासुर चलला, पूरा सजि-धजि कऽ ।

झाॅपल मुँहें सासु कहलथिन,
झा हमरा बड मानै छथि ।
जखन - तखन हमरो खातिर,

गरमे रसगुल्ला आनै छथि ।

अझुका सबटा गुलगुल्ला थिक झा बजला हँसि-हँसि कऽ,
मुँन्ना कक्का सासुर चलला, पूरा सजि-धजि कऽ ।

अय काकी

अय काकी, अय काकी बड़ कमाल कयलहुँ अय काकी ।

छथि सुधबौक हमर ई कक्का,
ऐंठल देह अचारक फक्का,
बनल रहै छथि सपरतीभ ई,
तैयो केहेन अपरतीभ ई,
उनटलहो इंजिन पर सिंगनल लाल कयलहुँ अय काकी ।
अय...

पितरलोक धरि डाकनि दै छी,
सातो पुरूखा के उकटै छी,
फीमेल भोटर क्यू मे लागल,
आई अहाँक घोघ अछि काढ़ल,
पतिक नाम कहबाक काल रंगताल कयलहुँ अय काकी ।
अय...

जखने अहाँ दाँत कें जॉती,
तखने हुनका लागनि दाँती,
स्वर्ग कतऽ नरको नसीब नहि,
लाश बनल घूमथि गंजन सहि,
कक्का कफन के फाड़ि - चीड़ रूमाल कयलहुँ अय काकी ।
अय...

कक्का जी मरला आसाम मे,
झुट्ठे हल्ला भेल गाम मे,
सुनिते कोठी सान्हि नुकयलहुँ,
पहिने बासि भात लऽ खयलहुँ,
सिनुर पोछि कऽ कक्का कें नेहाल कयलहुँ अय काकी।
अय....................................

दीनक नेना

देखहीं रौ बौआ, ई कौआ गवै छौ ।
सुनहीं रौ तोरे, कुचरि सुनवै छौ ।

एम्हर तों सूतल छे माँझे ओसार पर,
ओम्हर ओ नाचै पुवरिया मोहार पर,
पुरबा वसात बँसुरी बजवै छौ...................
सुनहीं रौ ....

तोरा लय बनलौ ने बिस्कुट आ चॉकलेट,
नोनो रोटी सँ ने भरतौ ई गोल पेट,
बातक मधुर स्वरलहरी अबै छौ.....................
सुनहीं रौ ....

बापे तोहर बनलौ परदेशी,
चिट्ठी ने एलौ भेलौ दिन वेशी,
माँ केर निनायल व्यथा जगबै छौ ।
सुनही रौ ....

की बुझबेँ ककरा कहै छै गरीबी,
सपनो मे सुख नहि जतऽ श्रमजीवी,
लुत्ती लगा कऽ नगर बसवै छौ ....
सुनहीं रौ ....

कोरा मे तोरा सुताबै छौ बिनियाँ
झटकल औ अविहेँ रौ, नूनूक निनिया,
तोहर उपास हमरा लजबै छौ,
सुनहीं रौ ....

पोताक अट्टहास

पोता - खेत टी खरिहान टी
आंगन टी दलान टी
बाबा आब अहींक कान मे,
टिटही टहकै टी टी टी ।

बाबा - प्याली पी भरि चुक्का पी,
घट घट पी सूरूक्का पी,
रौ कुलबोरन गाम घिनौले,
लाते, जुत्ता, मुक्का पी ।

पोता - लत्ती कू बा झब्बा कू,
अब्बा कू बा बब्बा कू,
आगाँ पाछाँ डोरा डोरि मे
डोलय दू - दू डिब्बा कू ।

बाबा - जऽर छू जमौरा छू,
नीपल पोतल दौरा छू,
मुँतिते घऽरक सीरा चढ़ले,
हगिते तुलसी चौड़ा छू ।

पोता - लोक कहैए बाटो पर सँ,
टीली लीली फट्ट औ
भेल अहाँ कें खाटो पर
उतरब दुरू घट्ट औ

आब अहाँ सँ डऽर कथी के
कतबो हुआ हुआ भूकू
हुआ - हुआ की - की हुआ,
मांगय विधकरी नूआ,
मैया - धीया साड़ी चाही

पुरहित कें धोती धूआ
कॉच बॉस केर नऽव पालकी आबय चारि कहरिया जू,
काशी ....

बाबा - कूथि - कूथि कठगील हगै छैँ,
देखे टन दऽ चलि जेबे
तोरे हम बरखी कऽ देबौ
हमर श्राद्ध तों की करबैं
सभ अपना नेना कें बरजू चेता दैत छी औ बाबू
जऽर छू ....

गजल

आशवर शीघ्र श्रावण मे औता पिया

प्यास पर नीर पावन बहौता पिया
देखि हुनका सुखक मारि सहि ने सकब, खसि पड़ब द्वारि पर ठाढ़ रहि ने सकब
पाशतर थीर छाती लगौता पिया,प्यास पर नीर पावन बहौता पिया

भऽ उमंगित बहत आड़नक बात ई, उल्लसित भऽ रहत चाननक गात ई
पाततर पिक बनल स्वर सुनौता पिया, प्यास पर नीर पावन बहौता पिया
मन उमड़ि गेल बनि गेल यमुँना नदी,तन सिहरि गेल जहिना कदंबक कली
श्वास पर धीर बंसुरी बजौता पिया,प्यास पर नीर पावन बहौता पिया

गजल

स्वप्न सुन्दरि अहाँ जीवनक सहचरी
निन्न मे आउ अहिना घड़ी दू घड़ी

भोग भोगल जते जे बनल कल्पना, आब भऽ गेल अछि अन्तरक अनमना
हऽम मानव अहाँ देव लोकक परी

मात्र उत्तापदायी बसंती छटा, आब संतापदायी अषाढ़ी घटा
कॉट लागनि सुखायल गुलाबी छड़ी

रूप अमरित पिया कऽ अमर जे केलहुँ, विक्ख विरहक खोआ फेर की कऽ देलहुँ?
घऽर मे जिन्दगी गऽर मरनक कड़ी

वेर वेरूक अहँक फेर अभयागतम्, अछि सदा सर्वदा हार्दिक स्वागतम्
कप्प चाहक दुहू नैन मन तस्तरी

गजल

अहँक लेल रंजन, हमर भेल गंजन
केहेन खेल ई, रक्त सँ हस्त मंजन
तरल नेह पर मात्र दुःखक सियाही
जड़ल देह हम्मर अहँक आँखि अंजन
रचल गेल छल जे, सुखक लोक सुन्दर
चलल अछि प्रलय लऽ तकर सुधिप्रभंजन
मृतक हम, अहाँ छी सुधा स्वर्ग लोकक
अहँक लेल यौवन हमर गेल जीवन

गजल

श्याम होइछ परक प्रेम अधलाह हे
तेँ बिसरि जाह हमरा बिसरि जाह हे

दीप बुझि रूप केँ जुनि हृदय मे धरह, मोहवाती जरा तेल नेहक भरह

कऽ देतऽ जिन्दगी केँ ई सुड्डाह हे, तेँ बिसरि जाह हमरा विसरि जाह हे

हऽम मधुवन मे साँझक पहिल तारिका, तोँ फराके बनावह अपन द्वारिका

उठि रहल अछि अनेरेक अफवाह हे

हम विमल राशक खास संयोजिका,

छी प्रवल गोपक प्रेयसी गोपिका
घाट सँ खुलि चुकल अछि हमर नाह हे,

मोन मे उत्तरी सागरक जल भरह, लाख चुचुकारी बर्फक महल मे धरह,
हम तहू ठाम बरबानलक धाह हे

गजल

सध्यः अहाँ, मुँदा छी सपना एहि जीवन मे
सहजो सुख भऽ गेल कल्पना एहि जीवन मे
विहुँसल ठोर विवश भऽ विजुकल
मादक नैन नोरक नपना एहि जीवन मे

अछि के कतऽ श्रृंगार सजाओत
आश लाश पर कफनक झपना एहि जीवन मे

दुनियाँ हमर एकातक गहवर
भेल जिअत मुँरूतक स्थपना एहि जीवन मे

दीप वारि अहाँ द्वारि जड़यलहुँ
घऽर हम लोकक अगितपना एहि जीवन मे

गजल

भरल भवधार छै सजनी कोना पदवार हम करबै
पड़ल सब भार छै सजनी, कोना पतवार हम धरबै

बनलि हम रूप केर रानी, मुदा पंथक भिखारिन छी
जड़ल घटवार छै सजनी, कोना इजहार हम करबै

सुभावक नाव पर हमरा जखन धऽ कऽ चढा देतै
अड़ल इकरार छै सजनी, कोना इनकार हम करबै

लगै छै मारि कँ दोमऽ जुआनी मारि बनि वीचे
मुद्दइ सुकुमार छै सजनी, कोना तकरार हम करबै

कहाँ धरि आर हम खसल करूआरि ओ नीचाँ
गहन अनहार छै सजनी, कोना भऽ ठाढ हम रहबै

कहिया धरि उदासी

(अंतिम- कविता)

हम प्रिय परदेश वासी
कोना ई मधुमास काटब
निरस काटब पकड़ि पासी
रमस बहसल वाटिका अछि
भ्रमर बहसल रंगसँ सखि
हम तँ दहसलि अपन मोनक
उठल सुप्त तरंगसँ सखि
जे छलि सुअंग स्वामिनि
से भेली अनंग दासी
नव वसंग उमंग आएल
पूरल सबहक कामना सखि
शूलसँ घेरल मुकुलवत
हमर तँ अराधना सखि
चलि रहत चलिते रहल
नहि जानि "कहिया धरि उदासी।"